भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 9 | जून 2008 | अंक 6

किताबें

किताबें भी साँस लेती हैं
कान लगाकर सुनो
उनका दिल भी धड़कता है
जब कोई प्यार से
उनके पास बैठता है, उनकी बात सुनता है

इन दिनों अक्सर
दिल उदास रहता है किताबों का
धड़कन मद्धम पड़ रही है
टी०वी० देखने और अखबारों के पन्ने पलटने में ही
ज़्यादा वक्त दे रहे हैं
उनके हमदम, पुराने दोस्त

ज़माने की इस बेरुखी से
उदास हैं किताबें
क्यों नहीं लोग
पहले जैसी चाहत से सुनते
उनकी सांसों का संगीत

— विश्वनाथ

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

पुस्तकें हमारी जिन्दगी को सजाने-सँवारने वाली सबसे खूबसूरत मित्र हो सकती हैं। ये हमें रास्ता दिखाते हुए हममें निर्णय लेने की क्षमता पैदा करते हुए हमें आनन्दित भी करती हैं। ये हमारे अकेलेपन को दूर करती हैं। ये हमारे थैले में चुपचाप दुबककर दुनिया के दूर से दूर और एकान्त स्थलों तक में हमारे साथ जाने को तैयार रहती हैं और सबसे बड़ी बात तो यह है कि ये कभी भी धोखा नहीं देतीं।

—डॉ० विजय अग्रवाल

प्रेयसी

विख्यात कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की कविताओं में नायिका के लिये प्रयुक्त सजनी, सखी, प्राणप्रिये जैसे शब्दों के प्रति जिज्ञासा प्रकट करते हुए आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने उनसे अपनी मातृभाषा बैसवाड़ी में पूछा—''काहे हो बालकिशन, तुम्हार यू प्रेयसी कहाँ रहत है जेकर बारे में तुम ई सब सजनी, सखी, सलौनी, प्रानवान लिखत रहत हौ?''

नवीनजी ने धीरे से उत्तर दिया, ''अब तुम बूढ़ भयो, का करिहौ इन सजनिन को मरम जानि कै!''

साहित्य-पुरुष की शताब्द-स्मृति

किसी भी देश के सांस्कृतिक-जीवन में साहित्य, साहित्यकार और उसकी जन्म-शताब्दी के आयोजन का अपना विशिष्ट अर्थ होता है क्योंकि साहित्य और साहित्यकार राष्ट्र की सांस्कृतिक अस्मिता के प्रतीक होते हैं जिनसे पढ़े-लिखे लोगों का सीधा सम्बन्ध तो होता ही है और कुछ सन्दर्भों में अशिक्षित-जन भी उस प्रभाव से अछूते नहीं रहते। ऐसे शताब्दी कार्यक्रमों में गोष्ठियाँ, परिसंवाद, सांस्कृतिक-आयोजन तो होते ही हैं, पत्र-पत्रिकाओं में लेख, संस्मरण, रचना-आलोचना आदि भी प्रकाशित होते हैं। कृतिकार के व्यक्तित्व और कृतित्व की गुरुता के मद्देनज़र सरकारें डाक टिकट ज़ारी कर देती हैं और देखते-देखते वर्ष बीत जाता है, आयोजन समाप्त होते हैं। किन्तु ऐसे किसी भी आयोजन में सामान्य छात्र, बुद्धिजीवी, कलाकार और दूसरे पेशों से जुड़े लोग प्रायः दूर रहते हैं, उनकी इनमें कोई सहभागिता नहीं होती। जबकि साहित्यकार सीधे जनता से जुड़ा होता है, वह जन-सामान्य के बीच जीता है और उसी के लिये लिखता है, अत: ऐसे आयोजनों से जनता को जोड़ना, उसकी सहभागिता निश्चित करना एक आवश्यक दायित्व है।

इस वर्ष (2007-08) हिन्दी साहित्य के चार शिखर-व्यक्तियों—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह दिनकर और हरिवंश राय बच्चन का जन्मशताब्दी वर्ष है। अपने समय में ये चारों रचनाकार साहित्य के अलावा दूसरे क्षेत्र के बौद्धिक और सामान्य-जन के बीच लोकप्रिय रहे हैं। हम उनका शताब्द-स्मरण तो कर रहे हैं किन्तु उनसे जुड़े सामान्य-जन को भूलकर अपनी-अपनी ढपली बजाने में मशगूल हैं। बेहतर होगा कि इन साहित्यकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित कुछ विशिष्ट नूतन कार्यक्रमों, उपक्रमों का सृजन करें जिसके आयोजन स्थल के रूप में स्कूलों, महाविद्यालयों, सार्वजनिक स्थलों आदि का प्रयोग करें और कार्यक्रमों का स्वरूप आयोजन स्थलों के स्वरूप के अनुसार तय करें तभी हम जन-जन को जोड़ सकेंगे। उनके मनो-मस्तिष्क में साहित्यकार की स्मृति जगा सकेंगे और तभी कृति और कृतिकार के प्रति सार्थक होगी हमारी शताब्द-श्रद्धांजलि।

सुनो, पापा सुनो!

''ऊँऽऽ...ऊँऽऽ...ऊँऽऽ...! रोता हुआ बच्चा स्कूल-बस से उतरता है, पीठ पर बस्ता, लटकता वाटर-बैग। माँ बस स्टैण्ड पर है। वह बच्चे के पास पहुँचती है, पुचकारती हुई बच्चे को सँभालती है। बच्चा उसी तरह रोते हुए कहता है—मम्मी, पापा से कह देना हम नईं जायेंगे स्कूल...!''

रोज़मर्रे की भागती-दौड़ती ज़िन्दगी के बीच क्या हमें अवकाश है कि हम सोच सकें कि हम खुद किधर जा रहे हैं और किस दिशा में ले जा रहे हैं अपने बच्चों को? वस्तुत: फूलों की तरह खिलखिलाते बच्चों का बचपन हमारे भविष्य के सपनों की बलिवेदी पर बलिदान हुआ जा रहा है और इस बलिकर्म के आयोजन में हम मगन हैं। अपने-अपने झुनझुने बजाते हुए कभी हमने सोचा है कि हमारे बच्चे का स्वाभाविक विकास हो रहा है या नहीं? क्या हमने बच्चे के होश सँभालने से पहले ही उसे किसी अंग्रेजी स्कूल की तथाकथित 'डिसिप्लिन' में धकेल दिया है और उसका भविष्य सँवार रहे हैं? यदि ऐसा है तो कहीं-

(शेष पृष्ठ 3 पर)

विदेशों में हिन्दी भाषा-साहित्य का अध्ययन : समस्याएँ

—प्रो० वसुधा डालमिया
कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, यू०एस०ए०

अध्ययन और अनुसंधान के क्षेत्र में सर्जनशील गत्यात्मकता के साथ नई पीढ़ी के अध्येता को दिशा-निर्देश देना एक गम्भीर दायित्व है, और दुर्योग से हिन्दी भाषा और साहित्य के विद्वानों में इस दायित्व-बोध का अभाव है। वस्तुत: इन विद्वानों में हिन्दी के प्रति अकादमिक-अनुशासन की कमी ही इसका प्रमुख कारण है। इसीलिए हिन्दी भाषा को अंग्रेजी के स्तर पर प्रतिष्ठित कर पाना मुश्किल होता जा रहा है; यद्यपि यह असम्भव नहीं है। मेरी दृष्टि में अंग्रेजी को अपदस्थ किये बिना हिन्दी और दूसरी भारतीय भाषाओं को अंग्रेजी के समानान्तर प्रतिष्ठित करना ही आज के समय की आवश्यकता है।

गतवर्ष, अंग्रेजी-आभिजात्य में पले-बढ़े भारतीयों के कारण कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय द्वारा हिन्दी और संस्कृत अध्ययन-अध्यापन को बन्द कर देना हमारे समक्ष कई प्रश्न छोड़ गया।

> *''वस्तुत: हिन्दी को, जो विदेशी लोग उसके महत्त्व को देखकर चाव से पढ़ना चाहते हैं, वे भारतीयों का हिन्दी के प्रति उपेक्षाभाव देखकर हताश हो जाते हैं।''*
>
> **— प्रो० जी० गोपीनाथन**
> *कुलपति*
> म०गाँ० अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय

पश्चिमी विश्वविद्यालयों में हिन्दी और संस्कृत विषय के अध्ययन और अनुसंधान का भारत में, हम भारतीयों के लिये क्या अर्थ है? कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय द्वारा संस्कृत-हिन्दी विषयों का अध्ययन बन्द किये जाने से क्यों लोग अपने को आहत महसूस करने लगे? क्यों-कर भारतीय विश्वविद्यालयों के पोस्ट-ग्रेजुएट छात्र भी अपनी बौद्धिक-जिज्ञासाओं के समाधान हेतु पश्चिमी विश्वविद्यालयों में संस्कृत-हिन्दी और दूसरी भारतीय भाषाओं के अध्ययन हेतु प्रवेश लेते हैं? अपने राष्ट्रीय-गौरव के आहत-मन से हम देखने को मज़बूर हैं कि हमारी आँखों के सामने पश्चिमी जगत के सर्वमान्य शिक्षा केन्द्र ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय संस्कृत और हिन्दी विषयों का अध्ययन-अध्यापन बन्द कर देते हैं। इस निर्णय से हम आहत हो सकते हैं किन्तु यहीं एक प्रश्न उभरता है कि अपने देश के प्रतिष्ठित शिक्षा केन्द्रों में संस्कृत, हिन्दी और दूसरी भारतीय भाषाओं (वर्नाकुलर) के अध्ययन को हम स्वयं कितना महत्त्व देते हैं?

लैटिन भाषा में 'वर्ना' (Verna) शब्द का अर्थ है 'घर में ही जन्मा गुलाम'। भारतीय भाषाओं के लिये प्रयुक्त इस 'वर्नाकुलर' शब्द को लक्ष्य करते हुए एक प्रतिष्ठित विद्वान ने संकेत किया था कि, ''भारतीयों की आदिम भाषाओं और संस्कृति को हीन मानकर, उससे पृथक् अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के उद्देश्य से अंग्रेजों द्वारा शासित और गुलाम लोगों की भाषा-संस्कृत के लिये 'वर्नाकुलर' शब्द का प्रचलन किया गया।'' आज भी भारतीय शिक्षा-पद्धति में 'वर्नाकुलर' शब्द का प्रयोग ज्यों का त्यों किया जाता है। हमारे यहाँ के प्राथमिक विद्यालयों में हिन्दी-शिक्षण के अलग-अलग मानक हैं। एक और 'आई०सी०एस०ई०' कोर्स में हिन्दी दसवीं कक्षा तक अनिवार्य विषय है तो दूसरी ओर 'सी०बी०एस०ई०' के पाठ्यक्रम में इसकी अनिवार्यता केवल आठवें दर्ज़े तक है। उसके बाद यह ऐच्छिक-विषय बन जाती है और संस्कृत तो क़तई अनिवार्य नहीं है। देश के केन्द्रीय दिल्ली विश्वविद्यालय में हिन्दी और संस्कृत विषयों के अध्ययन में 40 से 50 प्रतिशत कमी आयी है, प्राय: यही स्थिति देश के दूसरे विश्वविद्यालयों में भी है।

> *''जब हम राजनीतिक दृष्टि से पराधीन थे तब तो हमारे पास स्वाधीन भाषा थी। अब जब हम स्वाधीन हो गये, हमारी भाषाएँ पराधीन हो गयीं।''*
> **—स०ही०वा० 'अज्ञेय'**

भारत में ही भाषिक-प्रतिष्ठा की इस स्थिति का परिणाम यह हुआ है कि अंग्रेजी के अलावा सभी भारतीय भाषाओं को 'ग्राम्य' या 'गँवई' करार दे दिया गया है, भले ही वह राष्ट्रभाषा हिन्दी ही क्यों न हो, जिसे बोलने वाले करोड़ों लोग हैं, जिसका क्षेत्रफल विशाल है। यद्यपि इस दरम्यान हमारी देशी-भाषाओं के विद्वानों, रचनाकारों ने अपनी-अपनी भाषा को प्रतिष्ठा दी है, किन्तु महानगरीय आभिजात्य वर्ग और इस क्षेत्रीय सांस्कृतिक आभिजात्य वर्ग के बीच एक गहरी खाई कायम है।

> *''हिन्दी दुनिया की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है लेकिन कुछ लोग इसके विरुद्ध षड्यंत्र कर इसे मुट्ठी भर लोगों की भाषा साबित करने का प्रयास कर रहे हैं।''*
> **—डॉ० गंगाप्रसाद विमल**

क्या इस दूरी को पाटा जा सकता है? ऐतिहासिक परिदृश्य में ब्रिटिश-साम्राज्य के औपनिवेशिक शोषण और दमन के विरुद्ध बंगाली, मराठी, तमिल, हिन्दी और दूसरी भाषाओं के साहित्य ने भारतीय जीवन में नयी चेतना जागृत की, उसे आधुनिक दृष्टि दी। इसी नूतन दृष्टि ने एक राष्ट्र की कल्पना की और उसका निर्माण भी किया।

हमारी भाषाओं की प्राणवत्ता और उसकी सर्जनात्मकता खत्म नहीं हुई है बल्कि तथाकथित आभिजात्य वर्ग द्वारा कदम-कदम पर उसके विकास को अवरुद्ध किया जा रहा है। वे लोग, भाषिक-संस्कार के उन मूल स्रोतों को बन्द कर रहे हैं जिनके द्वारा उनके पितृ-पितामहों की चेतना स्पंदित हुई, जिसमें उनकी रचनात्मकता ने अभिव्यक्ति पायी।

पाश्चात्य विश्वविद्यालयों के भाषा-विभागों में उन छात्रों की संख्या तेजी से बढ़ी है जो अपनी भाषा को 'ग्राम्य' स्तर से मुक्त करना चाहते हैं, भले ही वे अंग्रेजी के स्नातक हों। भारतीय शिक्षा-पद्धति इतनी रूढ़ हो चुकी है कि वह नवीन जिज्ञासाओं के समाधान में अक्षम है। पुरानी पद्धति के विद्यालयों में बौद्धिक-स्वतन्त्रता और अंतर-अनुशासित अध्ययन का सर्वथा अभाव है, यद्यपि इस सम्बन्ध में बातें बहुत होती हैं। किसी भी विषय में स्नातकोत्तर-अध्ययन की पूर्व तैयारी एक दूसरी विधा के अनुशासन में ढालती है, जो कठिन तो है किन्तु असम्भव नहीं। दूसरी ओर यहाँ आर्थिक-संसाधनों का अभाव है, यहाँ केवल विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ही एकमात्र ऐसी संस्था है जो दीर्घ-अवधि के अध्ययन के लिये संसाधन प्रदान करती है, किन्तु उसके द्वारा प्रदत्त अध्येता-वृत्ति महानगरीय जीवन के लिये यथेष्ट नहीं है। प्राय: विषय से सम्बन्धित पुस्तकें नहीं मिलतीं और यदि संयोग से मिल भी जाँय तो काफी महँगी होती हैं। पुस्तकालयों में अच्छे संग्रह का अभाव है और उनमें भी भाषा-संस्कृति से सम्बद्ध पत्र-पत्रिकाओं का तो सर्वथा अभाव होता है। इसका कारण है हमारी व्यवस्थागत-राजनीति जिसके विशाल कलेवर में जड़ जमाये हुए है इस तरह के हज़ारों विकार, जिनसे नित-नयी परेशानियाँ उभरती रहती हैं।

एक अमेरिकन विश्वविद्यालय में हिन्दी प्राध्यापक के तौर पर, मेरे अपने व्यक्तिगत-सन्दर्भ में उपर्युक्त तमाम समस्याएँ और उनसे जुड़ी बहुत-सी बातें हैं, जो बहुत-कुछ अनकही हैं। विदेशों में 12 विश्वविद्यालय ऐसे हैं जो दक्षिण-एशियाई अध्ययन से सम्बद्ध हिन्दी-माध्यम से पी-एच०डी० अनुसंधान स्वीकार करते हैं। लगभग 22 विश्वविद्यालय हिन्दी में आरम्भिक शिक्षण प्रदान करते हैं। भारतीय छात्रों की माँग पर अधिकांश उन्मुक्त कला-विद्यालय 'हिन्दी' प्रशिक्षण की योजना बना रहे हैं। विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली तीन भाषाओं में एक है हमारी हिन्दी। अपनी इस हिन्दी को अमेरिका में प्रतिष्ठा दिलाना अत्यन्त आवश्यक है तभी हम सफल व्यावसायिक-व्यक्तित्व का निर्माण कर सकेंगे। तभी वैसी स्थितियाँ बनेंगी कि जब भी लोग अपनी 'सांस्कृतिक धरोहर' की बात करेंगे तो भाषा के बारे में भी बात करेंगे।

क्या इन बातों से भारतीय परिस्थितियाँ प्रभावित हो सकती हैं? क्या इनसे हिन्दी की

प्रतिष्ठा में गुणात्मक अन्तर आ सकेगा? क्या स्थितियाँ बदलेंगी? जब तक हम इस दिशा में प्रयत्न नहीं करते, हमारे प्रयत्नों के परिणाम—अदृश्य चमत्कार नहीं घटित होते तब तक इन प्रश्नों का उत्तर होगा—'नहीं'। इसी बीच 'जादवपुर विश्वविद्यालय द्वारा भारतीय भाषाओं को तथाकथित 'ग्राम्य' स्तर से निकालकर 'इंट्रावर्नाकुलर/इंग्लिश' के समानान्तर साहित्य और संस्कृति के तुलनात्मक अध्ययन हेतु प्रतिष्ठित किया जाना एक सराहनीय कदम है। इस तरह के निर्णयों से नये रोज़गार सृजित होंगे और विदेश में बसे भारतीय जो अपनी पी-एच०डी० पूर्ण कर चुके हैं और भारत लौटना चाहते हैं। वे भारत लौट कर इन नव-सृजित रोजगारों के माध्यम से भाषा, साहित्य और संस्कृति के अनुसन्धान द्वारा भारत के महानगरीय-आभिजात्य वर्ग में भारतीय भाषाओं को पुनर्स्थापित करने हेतु बीज अंकुरित कर सकेंगे।

टोरंटो में पुनर्जीवित हुई हिन्दी

कहते हैं प्यास गहरी हो तो आदमी कुआँ खोद कर पानी निकाल लेता है। कुछ ऐसा ही कनाडा के टोरंटो शहर में रह रहे भारतवंशियों ने कर दिखाया। उन्होंने टोरंटो विश्वविद्यालय में दम तोड़ रही हिन्दी की पढ़ाई को 32,000 डालर की आर्थिक मदद देकर पुनर्जीवित किया।

हालांकि टोरंटो विश्वविद्यालय में 1974 से साउथ एशियन भाषा शिक्षण योजना के अन्तर्गत हिन्दी शिक्षक न होने से कभी दो तो कभी तीन छात्र रहे। ज्यादातर पढ़ाने का जिम्मा विदेशी शिक्षकों के ही पास था। हिन्दी चेतना पत्रिका के सम्पादक डॉ० श्याम त्रिपाठी के अनुसार, विश्वविद्यालय की उपेक्षा से वहाँ हिन्दी की यह दशा हुई। विश्वविद्यालय ने धन खर्च करना रोक दिया तो भारतवंशियों ने बीड़ा उठाया और 32 हजार डालर एकत्र करके विश्वविद्यालय को सौंपे तो हिन्दी की पढ़ाई गतिमान हुई। उन्होंने स्वयं पाँच साल तक शिक्षण कार्य किया। इस समय यहाँ दो कक्षाओं में 75 विद्यार्थी हैं। कनाडा में हिन्दी का बोलबाला दिन पर दिन बढ़ रहा है। मन्दिरों में बच्चों को हिन्दी सिखाई जा रही है। 15 विश्वविद्यालयों में हिन्दी कक्षाएँ चल रही हैं।

शृंगार न होगा भाषण से, सत्कार न होगा शासन से,
यह सरस्वती है जनता की, पूजो, उतरो सिंहासन से॥
तुम इसे शांति में खिलने दो, संघर्ष काल में तपने दो।
हिन्दी है भारत की बोली, तो अपने आप पनपने दो॥
—गोपाल सिंह 'नेपाली'

(पृष्ठ 1 का शेष)

न-कहीं कोई चूक हो रही है। इतनी छोटी उम्र के बच्चे को माता-पिता के लाड़-प्यार और पारिवारिक संस्कार की आवश्यकता होती है, इन्हीं के बीच स्वाभाविक विकास करता हुआ बच्चा एक दिन विद्यालय की चौखट में प्रवेश करता है और फिर क्रमशः आगे बढ़ता है। अन्यथा, बच्चा परिवार से दूर होने लगता है, धीरे-धीरे यह दूरी रेगिस्तान बन जाती है जिसकी तपती रेत में क्रमशः सूखती जाती हैं भावनाएँ, संवेदनाएँ और दफ्न हो जाते हैं सारे सम्बन्ध।

वस्तुतः स्थितियों की भयावहता क्रमशः अपने दानवी पंजे फैलाती जा रही है और हम जानबूझकर अनजान हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अभाव में हमारे यहाँ शिक्षण-प्रशिक्षण के अलग-अलग मानक प्रचलित हैं। शासन द्वारा संचालित स्कूलों के अलग मानक हैं और शिक्षा-व्यापारियों द्वारा चलाये जा रहे स्कूलों के अलग। इन्हीं अलग-अलग प्रतिमानों को ढोते अभिभावक आर्थिक विपन्नता झेलते हैं तो बच्चे कथित शिक्षा के दबाव व तनाव में जीने के लिये विवश हैं। बाज़ारवाद की अंध-प्रतिस्पर्धा से हम तो ग्रस्त हैं ही, बच्चों के स्वाभाविक विकास को रोककर उनकी सहज-चेतना को भी प्रदूषित कर रहे हैं।

आरम्भिक कक्षाओं में बच्चों के सीखने की प्रक्रिया के नीरस होने के कारण और बच्चों के बस्ते का बोझ कम करने के लिये सन् 1992 ई० में मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने आठ शिक्षाविदों की एक समिति गठित की थी जिसके अध्यक्ष थे प्रो० यशपाल। इस समिति ने देश के विभिन्न शिक्षण-संस्थानों, शिक्षकों, अभिभावकों से विचार-विमर्श के उपरान्त जुलाई सन् 1993 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। जिसमें स्पष्ट उल्लेख था कि बच्चों के लिए स्कूली बस्ते के बोझ से अधिक बुरा है विषय को न समझ पाने का बोझ। इसी रिपोर्ट में पाठ्य-पुस्तकों के लेखन में शिक्षकों की भागीदारी बढ़ाते हुए उसे विकेन्द्रित करने और सभी विद्यालयों को पाठ्य-पुस्तकों के चयन सहित नये आचार-तंत्र को विकसित करने की बात कही गयी थी। तत्कालीन सरकार ने समिति की रिपोर्ट तो स्वीकार कर ली किन्तु सरकारी-गति के अनुसार कोई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन न हो सका।

यशपाल-समिति की इस रिपोर्ट का फायदा उठाया निजी स्कूलों ने। इसी रिपोर्ट के आधार पर इन स्कूलों ने अपने लिये पुस्तक-चयन का अधिकार प्राप्त कर लिया और प्रकाशकों से साँठ-गाँठ करके मुनाफा कमाने लगे। आज ये स्कूल ज़्यादा-से ज़्यादा मुनाफा बटोरने के लिये बच्चों के बस्ते का बोझ बढ़ाते जा रहे हैं। पाठ्य-पुस्तकों को रोज ढोने के बजाय उन्हें स्कूल में ही सहेजने का सुझाव सिरे से खारिज किया जा चुका है।

इन दिनों अंग्रेजी-स्कूलों में 'विशेष प्रकाशन संस्था' का दौर-दौरा है। इस प्रक्रिया में संबद्ध संस्था और प्रकाशन संस्थानों के बीच 'कांट्रैक्ट' और 'कमीशन' के आधार पर स्कूल पाठ्यक्रम एवं स्कूल पुस्तकालय हेतु प्रतिवर्ष नई किताबें आ जाती हैं और पढ़ने को मजबूर बच्चों के बस्ते का बोझा बढ़ता जाता है और स्कूल-पुस्तकालय भी किसी विशेष प्रकाशन संस्थान की पुस्तकों से भर जाते हैं जिससे विविधता और गुणवत्ता प्रभावित होती है और पुस्तकालय का असली उद्देश्य समाप्त हो जाता है। इसके समानांतर सरकारी स्कूलों के लिये पुस्तकें तैयार करनेवाली एनसीईआरटी भी विवादग्रस्त है जिसके चलते वह मूल पुस्तक के लेखक का नाम भी गोपनीय रखने लगी है। कैसी विडम्बना है कि इन्हीं त्रासदियों के बीच गढ़े जा रहे हैं भविष्य के स्वप्न, जबकि भविष्यवाहक बच्चा बस्तों के बोझ, कोर्स के आधिक्य और अभिभावकों की अपेक्षाओं के बीच कुंठाग्रस्त है। लगता है कि जैसे किसी अनभ्र-वज्रपात ने छीन लिया है बच्चों का बचपन और उनकी फूल-सी मुस्कान।

इस शैक्षणिक-बाज़ारवाद के शोषण के विरुद्ध यदि शिक्षक और अभिभावक एकजुट होकर बच्चों के विकास की स्वाभाविक-प्रक्रिया के बीच उनमें पढ़ने-पढ़ाने की मानसिकता विकसित कर सकें तभी राष्ट्रीय-स्तर पर शैक्षणिक-क्रान्ति सम्भव है जिससे गुज़र कर बच्चे अपने भविष्य का स्वयं निर्माण कर सकेंगे। बच्चों को पढ़ाने की जद्दोजहद के बीच हम भी अपना पुनरीक्षण करें, पुस्तकों से सम्बन्ध बनाये रखें और 'अपडेट' रहें। अन्यथा, सिर झुकाकर स्वीकार कर लें कि हमारी याददाश्त कमज़ोर हो चुकी है और एक टी०वी० चैनल पर प्रसारित 'रियलिटी-शो' के अनुसार हम 'पाँचवीं कक्षा भी पास नहीं हैं।' **—परागकुमार मोदी**

इक्कीसवीं सदी की भाषा : हिन्दी

— **बद्रीनारायण तिवारी**, कानपुर

''हिन्दी ज्ञान मेरे लिये अमृतपान है, जितनी बार उसे पीता हूँ, उतनी बार लगता है, पुन: जीता हूँ।''

मन को झंकृत करने वाली इन पंक्तियों को पढ़ने की बार-बार इच्छा होती है और यह जानकर प्रसन्नता भी कि हिन्दी की इन पंक्तियों को किसी भारतवासी ने नहीं वरन् दूर देश के निवासी (चेकोस्लोवाकिया) एक चेक नागरिक तथा प्रमुख शिक्षाविद् एवं भारत के राजदूत रहे डॉ० ओदेलोन स्मेकल ने लिखा है। उन्होंने हिन्दी में 12 से अधिक पुस्तकें लिखीं जो प्रकाशित भी हुईं। उसी हिन्दीनिष्ठ ने हमारे आमन्त्रण को स्वीकार कर 'मानस संगम' समारोह में भाग लेकर हिन्दी में दो रचनायें भी सुना कर अपार जनसमूह को चमत्कृत किया।

वार्सा विश्वविद्यालय, पोलैण्ड में भारत विद्या विभाग के अध्यक्ष तथा भारत में पोलैण्ड के राजदूत रह चुके प्रो० मारिया स्टोक बृस्की ने राष्ट्रपति को राजभवन में अपना परिचय-पत्र हिन्दी में ही प्रस्तुत किया था। हिन्दीनिष्ठ श्री बृस्की की दृष्टि में अंग्रेजी माध्यम होने से मानसिक विभाजन होगा। उनका स्पष्ट मत था कि भारत की आत्मा को पहचानने के लिये हिन्दी भाषा का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। हम विदेशी लोग भारतीय समाज और संस्कृति को अंग्रेजी में नहीं जान सकते हैं। 'मानस संगम' में भाग लेने हेतु उनका स्वीकृति पत्र भी हिन्दी में ही आया था—दुर्भाग्यवश विदेशी हिन्दी विद्वान् श्री बृस्की उस समय किसी कारणवश उपस्थित नहीं हो सके। वर्तमान समय में विदेशी हिन्दी विद्वानों की श्रृंखला काफी बड़ी हो चुकी है।

हिन्दी फिल्मों तथा कथा-प्रवचनकारों से विदेशों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार चल रहा है। जिसकी तीव्रगति को देखकर अनेक विदेशी अंग्रेजी चैनलों ने उनका हिन्दी में प्रसारण प्रारम्भ कर दिया। त्रिनिदाद एण्ड टोबैगो के भारत स्थित उच्चायुक्त पं० मणिदेव प्रसाद ने 'इंडियन एराइवल डे' के 162 वर्ष पूरे होने पर कानपुर प्रवास में तुलसीदास की पंक्तियाँ—'धन्य देश सो जहँ सुरसरी...' सुनाते हुए कहा कि उस देश को प्रणाम जहाँ पवित्र गंगा प्रवाहित होती है। त्रिनिदाद की भूमि में प्रवेश करते ही वहाँ के रेडियो में फिल्मी हिन्दी गीत के स्वरों से भारत देश का भ्रम हो जायेगा।

हिन्दी में सर्वप्रथम बी०बी०सी० लंदन ने नियमित समाचारों का प्रसारण शुरू किया था। इस समय तो हिन्दी प्रसारण हेतु 'वॉयस आफ अमेरिका' जर्मन रेडियो, जापान रेडियो, पेकिंग रेडियो (चीन) 'विविध भारती' सीलोन तो बहुचर्चित हैं ही। फ्रान्स, कोरिया, मारीशस, त्रिनिडाड, गयाना, सूरीनाम, म्यांमार, बंगलादेश, पाकिस्तान, सऊदी अरब, इंडोनेशिया आदि देशों में भी हिन्दी में काफी कार्य हुए हैं। ब्रिटेन में उज्बेकिस्तान के राजदूत श्री फतेह तेशबीब हिन्दी के प्रति समर्पित हैं। उनके अनुसार वहाँ के ताशकंद, समरकंद, अंदीजान में बच्चों को तीसरी से दसवीं कक्षा तक हिन्दी पढ़ाई जाती है।

संसार में हमारे पूर्वज जो गिरमिटिया मजदूर होकर मारीशस, सूरीनाम, फिजी, त्रिनीडाड, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में गये, वह अपने साथ **तुलसीदास की रामायण** और **हनुमान चालीसा** लेकर गये—**उसी ने हिन्दी भाषा और संस्कृति को सुरक्षित रखा।** अब इन देशों में बहुत बड़ी संख्या में हिन्दी संस्थाओं द्वारा हिन्दी शिक्षण कार्य हो रहे हैं जिन्हें मैंने प्रत्यक्ष अनुभव भी किया।

इंग्लैण्ड के पूर्व प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर ने विगत दीपावली में हिन्दी में मुबारकबाद देकर अंग्रेजी भाषा की मानसिकता वाले लोगों पर एक जोरदार तमाचा-सा जड़ा। अभी कुछ मास पूर्व अमेरिका के राष्ट्रपति जार्ज बुश के इस कथन पर कि हिन्दी 21वीं सदी की भाषा होने जा रही है, अपने देश में भी हिन्दी की संरक्षा अति आवश्यक है। उन्होंने अमेरिकी संसद से 11 करोड़ डालर हिन्दी विकास के लिये स्वीकृत कराने की घोषणा भी की। कम्प्यूटर तथा तकनीकी क्षेत्र पर भी हिन्दी में अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता को विश्व ने स्वीकारा है। इसका प्रयोग अक्षरात्मक हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, मराठी, गुजराती तथा नेपाली आदि भाषाओं को लिखने में भी होता है।

संसार में हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जिसे विदेशियों ने सर्वप्रथम विश्व पटल पर रखा सर्वप्रथम हिन्दी के शोधार्थी डॉ० लुइजि पियो तेस्सी तोरी ने फ्लोरेंस विश्वविद्यालय, इटली में 'रामचरित मानस और वाल्मीकि रामायण का तुलनात्मक अध्ययन' पर शोध किया। भारत से इतना प्रभावित हुए कि वह स्वदेश इटली छोड़कर जीवनपर्यन्त भारत (बीकानेर) में रहे। साम्यवादी देशों में सर्वप्रथम तुलसी कृत रामचरितमानस की लोकप्रियता देख स्टालिन ने द्वितीय विश्व युद्ध के समय अकादमीशियन अलकसेई वरान्निकोव द्वारा रूसी भाषा में पद्यानुवाद साढ़े दस वर्षों में कराया। तुलसी भक्त हिन्दी योद्धा बेल्जियम (योरोप) में जन्मे फादर डॉ० कामिल बुल्के जिन्होंने हिन्दी प्रेम के कारण भारत की नागरिकता ली और यहीं चिर निद्रा में विलीन हुए।

भारत एक बहुभाषी देश है। सम्पूर्ण देश में भाषा वैज्ञानिकों ने 1652 भाषायें तथा बोलियाँ बोली जाने की मान्यता दी है। शीर्षस्थ नेताओं ने अन्य प्रान्तीय भाषाओं और बोलियों का सहारा क्यों नहीं लिया उनका सरल उत्तर था—''हिन्दी एक ओर जनपदीय स्तर पर बोलियों के बीच आंतरिक एकता बनाती रही है तो दूसरी ओर भारतीय सन्दर्भ में अन्य भाषाओं के बीच सम्पर्क व एकता लाने का प्रयास करती रही है।''

16वीं-17वीं सदी में अंग्रेजों की मातृभाषा अंग्रेजी होने के बाद भी फ्रेंच और लैटिन भाषाओं का बोलबाला था। कानून फ्रेंच भाषा में बनते थे। शिक्षा लैटिन भाषा में दी जाती थी। सन् 1650 में इंग्लैण्ड की संसद में दायर एक याचिका में फ्रेंच और लैटिन भाषाओं को 'दासता का प्रतीक' कहा गया। 22 नवम्बर 1650 ई० में इंग्लैण्ड की संसद ने निर्णय लिया कि 1 जनवरी 1651 के बाद से फ्रेंच या लैटिन का प्रयोग सरकारी या गैर सरकारी कार्यों में नहीं किया जायेगा। मात्र 36 दिनों में इंग्लैण्ड की राजभाषा अंग्रेजी बन गयी जो अब तक अनवरत चल रही है। इसी प्रकार भारत से आठ मास पश्चात् स्वाधीन हुए लघु देश 'इजरायल' ने अपनी प्राचीन 'हिब्रू' भाषा की जीवंतता बनाये रखकर शत्रुओं से युद्ध करते हुए बहुमुखी विकास भी किया। स्वतन्त्रता के इतने वर्षों बाद भी जन-जन की भाषा—हिन्दी राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित नहीं हो सकी।

फिजी देश के हिन्दीनिष्ठ पूर्व मंत्री श्री विवेकानन्द शर्मा के दर्द भरे स्वर हिन्दी प्रेमियों को स्पष्ट संकेत दे रहे हैं—''**हम फिजी में बसे प्रवासी लोग अपनी संस्कृति और अपनी आत्मा के लिये भारत की ओर देखते हैं। मगर हिन्दी-रूपी द्रौपदी आज भारत में नग्न हो रही है और द्रोण चुप बैठें हैं। आज कृष्ण नहीं है, मगर फिजी जैसे छोटे से द्वीप से भी हम चीर देने को तैयार हैं। इसके लिये हम शहीद होने को भी तैयार हैं।**'' इस सन्दर्भ में मॉरीशस के भारत स्थित राजदूत श्री रोहित नारायण सिंह गत्ति के मेरे पास आये पत्र की कुछ पंक्तियों से ही हिन्दी के प्रति मॉरीशस के अटूट सम्बन्धों का अनुभव होगा—''यों तो इस छोटे से देश में फ्रेंच, इंग्लिश, उर्दू, तेलुगू, चीनी, तमिल, मराठी, गुजराती एवं क्रियोल भाषायें बोली जाती हैं लेकिन हिन्दी सबसे अधिक लोग समझते और बोलते हैं।....युग पुरुष महात्मा गाँधीजी के सद्प्रयास से मॉरीशस में हिन्दी संस्थाओं का जन्म हुआ। सन् 1968 में स्वतन्त्रता के पश्चात् मॉरीशस में हिन्दी के पठन-पाठन की सुविधाओं का बहुत विकास हुआ।''

जनवादी जर्मन गणतन्त्र में रेडियो बर्लिन के अधिकारी डॉ० फैडमैन श्लैडर की हिन्दी के प्रति भावना उन्हीं की कलम से, ''हमें न केवल प्रसन्नता होती है बल्कि गर्व भी है कि हम बर्लिन रेडियो द्वारा छोटी सी सेवा कर रहे हैं और कार्यक्रमों द्वारा उसे अन्तर्राष्ट्रीय संवाद की भाषा बनाने में योगदान दे रहे हैं। हिन्दी एक अन्तर्राष्ट्रीय चरित्र अपना रही है और हम उसके अन्तर्राष्ट्रीय चरित्र में अपना निरन्तर मर्यादित योगदान दे रहे हैं।''

अब 'हिन्दी' अन्तर्राष्ट्रीय भूमण्डलीयकरण युग की विश्व-भाषा बन चुकी है।

राय कृष्णदास की साहित्यिक पत्रिका 'सरोज' की कहानी

—पुरुषोत्तमदास मोदी

1910 ई० में राय कृष्णदासजी प्रयाग गये, दारागंज में उनकी ननिहाल थी। उस समय प्रयाग में विशाल प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। उस समय के अनुसार वहाँ अनेक अद्‌भुत चीजों की प्रदर्शनी हुई। प्रदर्शनी में विभिन्न प्रकार के आमोद-प्रमोद के आयोजन के साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम भी थे। यथा नाट्‌यशाला में नाटक, ग्रामोफोन रेकार्ड पर गाने, रुस्तमेहिन्द गामा की कुश्ती आदि। प्रदर्शनी में भारतीय चित्रकला विभाग का आयोजन डॉ० कुमारस्वामी ने किया था। 18 वर्षीय राय साहब के लिए मनोरंजन तथा जानकारी की अनेक वस्तुएँ थीं।

इण्डियन प्रेस से 'सरस्वती' अत्यन्त आकर्षक रूप में निकलती थी। राय साहब के मन में भी एक सचित्र साहित्यिक पत्रिका निकालने की अभिलाषा जगी। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल उस समय 26 वर्ष के थे और नागरी प्रचारिणी सभा में 'हिन्दी शब्द सागर' में वैतनिक सहायक थे, उन्होंने उसका सम्पादन स्वीकार किया और नामकरण हुआ 'सरोज'। छपाई के लिए पं० कृष्णकान्त मालवीय के अभ्युदय प्रेस का चुनाव हुआ। उस प्रेस से 'मर्यादा' पत्रिका निकलती ही थी जबकि उत्कृष्ट छपाई के लिए इण्डियन प्रेस और पं० जवाहरलाल नेहरू द्वारा स्थापित लॉ जर्नल प्रेस विख्यात थे। अभ्युदय प्रेस चुनने का एक और भी कारण था। उस समय के संशोधित प्रेस एक्ट के अन्तर्गत सामयिक पत्रों से जिलाधिकारी को जमानत माँगने का अधिकार था। पं० कृष्णकान्तजी मालवीय ने रायसाहब को आश्वस्त कर दिया था कि वे ऐसी स्थिति नहीं आने देंगे। 'सरोज' के लिए पं० बालकृष्ण भट्ट, पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी, पं० किशोरीलाल, मु० देवी प्रसाद, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' के लेख तथा श्रीधर पाठक की 'धनाष्टक' नामक कविता प्राप्त हुई। अन्य अनेक साहित्यकारों का भी सहयोग मिला। प्रथम अंक के मुखचित्र का अंकन अवनीन्द्र नाथजी ने किया था, 'मानस सरोज' वराटक पर नाचते नवनीतधारी बालकृष्ण। इस पर मैथिलीशरणजी ने मुखचित्र के सन्दर्भ में एक अष्टक भेजा जिसकी प्रारम्भिक पंक्तियाँ थीं—

जै भक्त-मानस-सरोज निराकारी।
लीलामते सगुण-निर्गुण रूपधारी॥

राय साहब को प्रसादजी की कविता के लिए भरी जेठ में काशी आना पड़ा—प्रसादजी ने निम्नलिखित चतुष्पदी दी—

अरुण अभ्युदय से हो मुदित मन,
प्रशान्त सरसी में खिल रहा है॥
प्रथम पत्र का प्रसार करके,
सरोज अलिंगन से मिल रहा है॥
गगन में सन्ध्या की लालिमा से,
किया संकुचित वदन था जिसने॥
दिया न मकरन्द प्रेमियों को,
गले उन्हीं के वो मिल रहा है॥
तुम्हारा विकसित बदन बताता,
हँसे मित्र को निरख के कैसे।
हृदय निष्कपट का भाव सुन्दर,
बदन पे तेरे उछल रहा है।
निवास जल ही में है तुम्हारा,
तथापि मिश्रित कभी न होते।
मनुष्य निर्लिप्त होवे कैसे,
सु-पाठ तुमसे ये मिल रहा है।
उन्हीं तरंगों में भी अटल हो,
जो करना विचिलित तुम्हें चाहती।
मनुष्य कर्त्तव्य में यों स्थिर हो,
ये भाव तुम में अटल रहा है।
तुम्हें हिलाए भी जो समीर न,
तो पाए परिमल प्रमोद पूरित।
तुम्हारा सौजन्य है मनोहर,
तरंग कह कर उछल रहा है।
तुम्हारे केसर से हो सुगन्धित,
परागमय ही रहे मधुदूत।
'प्रसाद' विश्वेश का होवे तुम पर,
यही हृदय से निकल रहा है॥

प्रसादजी से उनका यह प्रथम साहित्यिक सम्पर्क था। उनके शब्दों में—

''काशी के इस त्रिदिवसीय पड़ाव में उनकी आत्मीयता की एक अभिव्यक्ति ने मुझे चकित और पुलकित, साथ-साथ गौरवान्वित भी कर दिया। उन्होंने विशेष शोधपूर्वक चन्द्रगुप्त मौर्य पर एक अध्ययनीय पुस्तिका प्रकाशित कर रखी थी जो समर्पित थी उनके इस अभिन्न को। कैसी पुलक हुई मुझे उस समय जब उन्होंने उसकी हस्ताक्षरित प्रथम प्रति मुझे दी, प्रेमालिंगन सहित। रहस्यमय वह थे ही, मुझे कोई सुनगुन न लगने दी थी, अत: इस आतर्कित विस्मयपूर्ण आनन्दावेग ने मुझे विभोर कर दिया। हाँ, कुछ देर तक 'मन भावे, मूड़ी हिलावे' अवश्य करता रहा।''

और 'सरोज' मुद्रित हो गया। सुन्दर आवरण से सज्जित पत्रिका छपकर सिलकर तैयार हुई। अब पंजीकरण के लिए आवेदन की बारी आयी। पंजीकरण के लिए पाँच सौ रुपयों के जमानत की माँग हुई। पं० कृष्णकान्त मालवीय का आश्वासन काम नहीं आया और 'सरोज' बेरोज हो गया, हवाई किला ध्वस्त हुआ और लम्बा बिल चुकाने और प्रतियों को रद्दी के भाव बेचने के साथ 'सरोज' का जन्म और मरण दोनों साथ ही हो गया। यह 'सरोज' की कहानी है जो बिना किसी इतिहास के समाप्त हो गयी। अनवेण्ट, अशसंग।

समवेदना के पत्र

परम आदरणीय साहित्य मनीषी व सहृदयी व्यवहार के धनी श्री पुरुषोत्तमदासजी मोदी के स्मृति शेष रहने की जानकारी मिल गई थी। मैं पत्नी की गम्भीर बीमारी और उनकी शल्य चिकित्सा के सन्दर्भ में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली की गिरफ्त में अरुणाचल प्रदेश से दूर था। मुझे याद है कि अब तक की काशी की अपनी इकलौती यात्रा के दौरान लगभग 5-6 साल पहले जब मैं वहाँ था तब पूज्य मोदीजी के दर्शनों व अल्पकालिक ही सही, उनके आत्मीय सान्निध्य का सौभाग्य मिला था। बड़ी देर तक वे अरुणाचल प्रदेश और यहाँ के जनजीवन के बारे में पूछते रहे। उनकी वह भीनी-भीनी आत्मीयता अभी तक ताजा है। कृपया, मेरी सहानुभूति व सहभागिता स्वीकारें। अनेक नामचीन व्यक्तियों के वक्तव्यों से आश्वस्त हूँ कि आप व अन्य परिजन मोदीजी की सारस्वत परम्परा को शाश्वत रखेंगे। विनम्र श्रद्धांजलि!

❑ **डॉ० मधुसूदन शर्मा**
अरुणाचल प्रदेश

श्री पुरुषोत्तमदास मोदी उन विरले महापुरुषों में थे, जिनमें विद्या और विद्वता वास्तव में विनय के रूप में चरितार्थ थी। वे एक कुशल लेखक थे। समाज के और साहित्य के हित से सदैव जुड़े रहते थे। 'भारतीय वाङ्मय' में उनके सम्पादकीय लेखों से उनकी लेखकीय प्रतिभा का पता चलता है किन्तु एक बड़े प्रकाशन अधिष्ठान के स्वामी होने के कारण लोक में उनका यह लेखकीय रूप उतना उजागर नहीं हो सका।

प्रकाशकों में जो दंभ और व्यावसायिक अहंकार रहता है, वह उन्हें छू तक नहीं गया था। उनकी कमी न केवल प्रकाशन से जुड़े लोगों को अपितु सम्पूर्ण साहित्य जगत को हमेशा महसूस होगी। सरस्वती के सर्वतोभावेन समर्पित पुत्र महापुरुष श्री पुरुषोत्तमदास मोदी को मैं अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

❑ **डॉ० मोहन गुप्त**, उज्जैन

''साहित्य का प्रदेश, भाषा की भूमि जानने पर ही निश्चित हो सकता है। यदि हिन्दी भाषा की भूमि सिर्फ उत्तर प्रान्त की होगी तो साहित्य प्रदेश संकुचित रहेगा। यदि हिन्दी भाषा राष्ट्रीय भाषा होगी तो साहित्य का विस्तार भी राष्ट्रीय होगा।''

— महात्मा गाँधी
(हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इन्दौर में दिये गये भाषण का अंश)

विचारों के युद्ध में पुस्तकें ही अस्त्र हैं।

— जार्ज बनार्ड शा

मंच प्रस्तुति

'काशीनामा' में दिखी बाजारवाद की विडम्बना

वाराणसी। एक यादगार अनुभव दे गया नाटक 'काशीनामा' का जीवंत मंचन। नाटक में एक ओर जहाँ काशी की गौरवशाली परम्परा जीवंत हुई, वहीं भूमण्डलीकरण के दौर में पूँजीवाद के प्रभाव से धर्म-संस्कृति व सभ्यता पर लगी चोट भी जीवंत ढंग से परिलक्षित हुई।

नागरी नाटक मण्डली परिवार व संगीत नाटक अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में मुरारी लाल मेहता प्रेक्षागृह में मंचित कोलकाता की रंगकर्मी सुश्री उषा गांगुली के नाटक 'काशीनामा' ने वैश्विकता की चकाचौंध और पारम्परिक संस्कृति को लेकर अंतर्द्वंद्व की ऊँचाइयों को छूते हुए एक सवालिया निशान खड़ा किया और यह बताने की सफल कोशिश की कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति अक्षुण्ण है।

विख्यात कथाकार **काशीनाथ सिंह** के आलेख पर आधारित नाटक 'काशीनामा' की कहानी अस्सी मोहल्ले के अत्यन्त धार्मिक व्यक्ति धर्मनाथ शास्त्री के जीवन पर आधारित है। कहानी में दर्शाया गया है कि ग्लोबलाइजेशन के बाद किस प्रकार परम्परागत शहर बनारस की जीवन शैली में बदलाव आया। पूँजीवाद के जन-जन पर प्रभाव के बाद लोगों की जिन्दगी में जो परिवर्तन आए, उसके कारण किस प्रकार शास्त्रीजी को शिवलिंग रखने के स्थान को शौचालय का रूप देना पड़ा। और फिर सपने में शास्त्रीजी को शंकर भगवान आते हैं और कुछ निर्देश देते हैं।

अन्त में खण्डित शिवलिंग के विसर्जन का दृश्य है। कलाकारों के सशक्त अभिनय ने अन्त तक खचाखच भरे सभागार में श्रोताओं को बाँधे रखा। समारोह के मुख्य अतिथि विख्यात साहित्यकार नामवर सिंह भावुक हो उठे। नाटक के अन्त में उन्होंने कहा कि "हूँ तो अस्सी का पर लगता है कि आज सौ साल का हो गया हूँ। इसलिए यह काशीनामा का ही शतक नहीं, मेरा भी शतक है। यह कहते हुए कण्ठावरोध के कारण नामवरजी रो पड़े"।

> "जो लेखक चुपचाप रहकर साहित्य की सेवा कर रहे हैं, साहित्य के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित वही सही अर्थों में साहित्य की सेवा कर रहे हैं।" **—डॉ० नामवर सिंह**

जो प्रयत्नपूर्वक नहीं लिखा जाता वह सामान्यतया नीरस मन से पढ़ा जाता है।

—डॉ० सैमुअल जॉनसन

किसी पुस्तक का सर्वाधिक गुण यह है कि वह किसी सीमा तक पठनीय है।

—एन्थनी ट्रोलोप

लेखकों, लिखने के लिए ऐसा विषय चुन लो जो तुम्हारी लेखन क्षमता के अनुकूल हो।

—होरेस

काशी के सशक्त हस्ताक्षर

विद्वान लेखक एवं प्राध्यापक : एक रूपरेखा

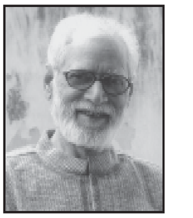

डॉ० काशीनाथ सिंह

एम०ए०, पी०-एचडी०

"काशीनाथ सिंह के व्यक्तित्व की एक खूबी मुझे बहुत भाती है, वह है उनका ठेठ ग्रामीण व्यक्तित्व। वे ज़मीन के आदमी हैं और आदमी से ही ज़िन्दगी को समझते हैं। काशी में पेंच नहीं है। शहर में रहते हुए भी ग्रामीण संवेदना, भोलापन और सच्चाई बचाकर रख पाना और शहरी विकृतियों से अपने को बचाये रखना बड़ी बात है। काशीनाथ पक्षी की तरह हैं, वृक्ष की तरह हैं, जिसे प्रकृति ने गढ़ा, ग्राम्य परिवेश ने सँवारा। काशी में कृत्रिमता नहीं है। वे सीधे-सादे हैं 'तीसरी कसम' के 'हीरामन' की तरह।"

सुप्रसिद्ध लेखिका महाश्वेता देवी का यह चित्रांकन डॉ० काशीनाथ सिंह के व्यक्तित्व और कृतित्व का समग्र निदर्शन है। समकालीन हिन्दी साहित्य के प्रथम पांक्तेय हस्ताक्षर डॉ० काशीनाथ सिंह को किसी परिचय की अपेक्षा नहीं है। फिर भी अभिलेख-संरक्षण का दायित्व निर्वाह करते हुए प्रस्तुत है यात्रावृत्त—

जन्म, शिक्षा और सेवा : चन्दौली जिले के जीयनपुर गाँव में पहली जनवरी सन् 1937 को जन्मे डॉ० काशीनाथ सिंह, अपने गाँव के आसपास के विद्यालयों में पढ़ते-लिखते क्रमशः काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के स्नातक और पी-एच०डी० (1963) हुए। और इसी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक (1965 ई०), प्रोफेसर और अध्यक्ष होकर 1997 ई० में सेवानिवृत्त हुए। उन्हीं दिनों काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से ही प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'परिवेश' का सम्पादन।

प्रकाशित रचनाएँ : लोग बिस्तरों पर, सुबह का डर, आदमीनामा, सदी का सबसे बड़ा आदमी, कल की फटेहाल कहानियाँ, प्रतिनिधि कहानियाँ, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, कहनी उपखान (कहानी-संग्रह), घोआस (नाटक), हिन्दी में संयुक्त क्रियाएँ (शोध), आलोचना भी रचना है (समीक्षा), अपना मोर्चा, काशी का अस्सी, रेहन पर रग्घू (उपन्यास), याद हो कि न याद हो, आछे दिन पाछे गए (संस्मरण)

'अपना मोर्चा' का जापानी एवं कोरियाई भाषाओं में अनुवाद। जापानी में कहानियों का अनूदित संग्रह। कई कहानियों के भारतीय और अन्य विदेशी भाषाओं में अनुवाद। उपन्यास और कहानियों की रंग-प्रस्तुतियाँ। 'रेहन पर रग्घू' (उपन्यास) का इतालवी में अनुवाद शीघ्र प्रकाश्य। 'तीसरी दुनिया' के 'लेखकों-संस्कृतिकर्मियों के सम्मेलन' के सिलसिले में जापान-यात्रा (नवम्बर '81)।

पुरस्कार/सम्मान : कथा सम्मान, समुच्चय सम्मान, शरद जोशी सम्मान, साहित्यभूषण सम्मान।

क्या खोया/क्या पाया : *खोया* कुछ निहायत अपनी चीजें। *पाया* पाठकों के साथ-साथ संस्कृति कर्मियों, नाट्य दर्शकों और काशीवासियों की आत्मीयता।

आगामी योजनाएँ : सतत सारस्वत साधना।

महत्त्वपूर्ण संदेश : नये लेखकों के लिये—लिखें, किन्तु त्वरित उपलब्धि की आकांक्षा लेकर रचनाकर्म न करें। यह धीरज का काम है।

सम्पर्क : बी-61, ब्रिज इन्क्लेव अनवरत, सुन्दरपुर, वाराणसी-221005

फोन : 2317544, मोबाइल : 09452826562

सम्प्रति : बनारस में रहकर स्वतंत्र लेखन।

आह को चाहिए इक उम्र असर होने तक

80 वर्षीय अमरकान्त हिन्दी के शीर्षस्थ लेखकों में से एक हैं। कथासाहित्य में उनका योगदान महत्त्वपूर्ण है। हिन्दी की नयी कहानी के प्रणेताओं में एक अमरकान्त ने 10 उपन्यास 12 कथासंग्रह के अलावा बाल साहित्य की अनेक रचनाएँ दी हैं। इस वर्ष साहित्य अकादमी ने भी उनकी रचनाओं को सम्मान दिया और उन्हें पुरस्कृत किया। किन्तु अपनी अवस्था, बीमारी, अकेलेपन और उपेक्षा के चलते आज वे आर्थिक संकट में हैं। पिछले दिनों उन्होंने अपने कष्ट का उल्लेख करते हुए मीडिया के नाम एक पत्र जारी किया, जिसके शब्द-शब्द से उनकी अंतर्वेदना मुखरित हो रही थी। यह हमारी राष्ट्रीय विडम्बना ही है कि इतने प्रतिभाशाली लेखक को अपनी विपन्नता इस प्रकार बयान करनी पड़ती है। इस सिलसिले में मध्य प्रदेश सरकार, साहू जैन ट्रस्ट द्वारा 25 हजार रुपये और जनसंस्कृति मंच, सांस्कृतिक संकुल-वाराणसी द्वारा 50 हजार रुपये प्रदान किये जाने हैं। यद्यपि यह परिस्थिति का तात्कालिक समाधान है किन्तु कोई ऐसा विधान होना चाहिए कि सरकारी संसाधनों का इस्तेमाल केवल राजनेता ही नहीं बल्कि वैज्ञानिक, शिक्षाविद्, साहित्यकार और संस्कृतिकर्मी भी कर सकें, जिनका लोकजीवन से गहरा सम्बन्ध होता है।

अत्र-तत्र-सर्वत्र

बच्चन और दिनकर पर होगा मंथन

वाराणसी। महादेवी वर्मा, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, रामधारी सिंह दिनकर, आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी और हरिवंश राय बच्चन की जन्मशती है। साहित्य अकादमी इस अवसर पर इनके रचना संसार की समीक्षा करेगी। इसके लिए राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठियों के आयोजन की तैयारी है। खास बात यह कि ये आयोजन रचनाकारों से जुड़े स्थलों पर ही किए जाएँगे।

महादेवी वर्मा की जन्मशती दिल्ली में 28 से 30 मार्च तक मनाई गई। विद्वानों ने उनके रचना संसार का पुनरावलोकन किया। बलिया में जन्मे आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का समय शान्ति निकेतन और काशी में बीता। उनके रचना संसार पर चर्चा के लिए अकादमी ने काशी चुना। यहाँ 20 और 21 मई को राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी पर गुजरात के बल्लभ विद्यानगर में संगोष्ठी आयोजित करने की अकादमी की योजना है। 'समकालीन आलोचना और आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी' नामक इस संगोष्ठी का आयोजन अगस्त में किया जाएगा। रामधारी सिंह दिनकर की जन्मशती पर बड़ा आयोजन करने की तैयारी है। दिल्ली में अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी होगी। *वरिष्ठ साहित्यकार* और *साहित्य अकादेमी* में *हिन्दी के संयोजक* **डॉ० विश्वनाथप्रसाद तिवारी** ने बताया कि सरकार चाहती है कि दिल्ली में कोई बड़ा आयोजन हो। सितम्बर-अक्टूबर माह तक दिल्ली में अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी तो होगी ही। पटना अथवा मुजफ्फरनगर और भोपाल में भी संगोष्ठियाँ आयोजित की जाएँगी। आधुनिक जनकवि डॉ० हरिवंश राय बच्चन की जन्मशती का आयोजन इलाहाबाद या मुम्बई में करने पर विचार चल रहा है। अकादमी के उपसचिव डॉ० ब्रजेंद्र त्रिपाठी का कहना है कि हमारा प्रयास है कि अकादमी की गतिविधियाँ देश भर में हों ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग जुड़ सके। इसीलिए पिछले दिनों अकादमी ने हिन्दी परामर्श की बैठक हिमाचल में आयोजित की।

'बच्चन' की स्मृति में 'बच्चन'

बालीवुड के सुपरस्टार अमिताभ बच्चन की योजना अपने पिता हरिवंश राय बच्चन की याद में स्मारक बनाने की है। वह मानते हैं कि जाने माने हिन्दी भाषा के कवि बच्चन के साहित्य में किए गये योगदान को चुनौती नहीं दी जा सकती। बच्चन ने कहा कि हम उनकी याद में कुछ करना चाहते हैं। चाहे वह उनकी याद को बनाये रखने के लिए ही शोध अथवा अन्य किसी क्षेत्र से जुड़ा हो लेकिन हमारी योजना कुछ करने की है।

तमिलनाडु : हिन्दुस्तान समाचार ने शुरू की तमिल भाषा में संवाद सेवा

हिन्दुस्तान समाचार ने क्षेत्रीय भाषाओं के समाचार सम्प्रेषण के क्षेत्र में एक नई ऊँचाई हासिल करते हुए तमिल भाषा में भी अपनी सेवाओं की शुरुआत कर दी है। **तमिल नववर्ष** के अवसर पर इस सेवा की शुरुआत भारतीय विद्या भवन में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान की गई।

'गाँधी' के घर अँधेरा

पिछले दिनों ऐन मैच के दौरान इडेन गार्डेन कुछ देर के लिए अँधेरे में रहा था। इसकी देशभर में चर्चा रही। अब अंधेरे की वजह से चर्चा में है यहाँ का राजभवन, एक दूसरे से महज 200 मीटर के फासले पर स्थित महानगर के दोनों बहुचर्चित परिसरों में मैच के दिन उजाले व अँधेरे का फर्क रहा। क्रिकेट प्रशंसकों की भीड़ से खचाखच भरे स्टेडियम की दुधिया रोशनी आईपीएल की लोकप्रियता व चमकदमक दिखा रही थी। दूसरी ओर स्वेच्छा से अँधेरे की चादर ओढ़े राजभवन में आम लोगों की जिन्दगी के अँधेरे को दूर करने का जज़्बा छिपा था। दरअसल कभी लाट-गवर्नर की शान-शौकत के प्रतीक रहे इस राजभवन में आने के बाद गोपाल कृष्ण गाँधी खास अंदाज के लिए बराबर चर्चा में रहे हैं। व्यक्तिगत पहल कर उन्होंने बांग्ला सीखी। गाँवों में घूमते रहते हैं। अधिकांश कार्यक्रमों में बांग्ला ही बोलते हैं। अपने काफिले से अतिरिक्त वाहनों को हटा दिया, अब वे दो घण्टे बिना बिजली के रह रहे हैं। उनकी इच्छानुसार शाम को जब 27 एकड़ में फैले इस ऐतिहासिक भवन में अँधेरा किया गया तो देखने के लिए राहगीरों व मीडिया वालों की भीड़ उमड़ने लगी। आस-पास की सड़कों से गुजरने वाले वाहनों की गति भी धीमी पड़ जा रही थी। लोग राजभवन के इस नये रूप को देखना चाह रहे थे।

पश्तो भाषा में लिखी जा रही गाँधी पर पहली किताब

हिंसा की आग में झुलस रहे अफगानिस्तान में अंहिसा के पुजारियों की भी कमी नहीं है। ऐसे ही एक पुजारी हैं 50 वर्षीय प्रोफेसर ऐ०के० राशिद। वह पश्तो भाषा में महात्मा गाँधी पर किताब लिखने में व्यस्त हैं। उनका कहना है कि यह पश्तो भाषा में गाँधी पर पहली किताब होगी। दुनिया के कुछ सबसे भीषण गृहयुद्धों में से एक के साक्षी रहे राशिद ने अपने जिन्दा शहर काबुल को खंडहर मे तब्दील होते देखा है। शायद यही कारण है कि वह अपने देश के लोगों को एक बार फिर गाँधी से परिचित कराने का बीड़ा उठा रहे हैं।

ज्ञान बढ़ा रहे हैं सांसद

इन दिनों महँगाई में सांसदों की दिलचस्पी अचानक ही बढ़ गई है। संसद में इस मुद्दे पर बहस में उनकी रुचि भले न हो, लेकिन इस बारे में ज्ञान जुटाने के लिए वे जरूर मेहनत कर रहे हैं। संसद के पुस्तकालय के रिकार्ड कुछ ऐसे ही संकेत दे रहे हैं। संसद के पुस्तकालय से जुड़े एक वरिष्ठ अधिकारी का कहना है कि हाल के दिनों में सांसदों द्वारा खाद्य सुरक्षा, खाद्यान्न संकट, कच्चे तेल का बाजार, जैविक ईंधन और इनसे सम्बन्धित सामग्री वाली पुस्तकों की खूब माँग की जा रही है।

हर जिला अस्पातल में खुलेगी अत्याधुनिक लाइब्रेरी

उत्तर प्रदेश के स्वास्थ्य विभाग ने अब डॉक्टरों के ज्ञान परिमार्जन को भी अपना लक्ष्य बनाया है। इसी के तहत प्रमुख सचिव चिकित्सा स्वास्थ्य, नीता चौधरी ने हर जिला अस्पताल में अत्याधुनिक लाइब्रेरी खोलने का आदेश दिया है।

क्या आप पाँचवीं पास हैं ?

एनसीईआरटी की एक रिपोर्ट के अनुसार पाँचवीं कक्षा में पढ़ने वाले 45 प्रतिशत बच्चों को गणित का सामान्य जोड़-घटाना नहीं आता। जबकि विज्ञान के बच्चों की स्थिति और भी बदतर है। इस खुलासे के बाद विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में एक बड़ी फौज तैयार करने का सरकारी सपना तो चूर हो गया। अब सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत होने वाली नियुक्तियों में यह सुनिश्चित किया जायेगा कि प्रत्येक तीन शिक्षकों की नियुक्ति की स्थिति में एक विज्ञान और एक गणित के अध्यापक की नियुक्ति अवश्य की जाय, तभी भविष्य में राष्ट्रीय स्तर पर वैज्ञानिक प्रतिभाओं का विकास सम्भव हो सकेगा।

पूर्वांचल पुस्तक व्यवसायी परिषद् प्रथम अधिवेशन

सांस्कृतिक राजधानी वाराणसी में पूर्वांचल पुस्तक व्यवसायी परिषद् का दिनांक 1 जून 2008, रविवार के दिन प्रथम अधिवेशन आयोजित हो रहा है। इस अधिवेशन में पहली बार पूर्वांचल— वाराणसी, जौनपुर, गाजीपुर, मऊ, भदोही, आजमगढ़, बलिया, मिर्जापुर, ओबरा आदि क्षेत्रों के प्रकाशक और पुस्तक विक्रेता परस्पर विचार-विमर्श करेंगे। वाराणसी के चौकाघाट पर मकबूल आलम रोड स्थित सांस्कृतिक-संकुल में निर्धारित तिथि के दिन पूर्वाह्न 10 बजे, उ०प्र० सरकार के नगर विकास एवं वाणिज्य मंत्री मा० नकुल दूबे के मुख्य आतिथ्य में कार्यक्रम का शुभारम्भ किया जायेगा। दो सत्रों के इस आयोजन के प्रथम सत्र में वरिष्ठ पुस्तक व्यवसायी बंधुओं का सम्मान किया जायेगा।

बौद्धिक-साहित्यिक चोरी

पिछले दिनों काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के विज्ञान-संकाय के एक विभाग के प्रोफेसर ने अपने एक सहोयगी शिक्षक के खिलाफ शोध के आँकड़े चुराने का आरोप लगाया। जाँच हुई,

आरोप सही पाया गया। लेकिन दोषी को सजा के मामले में विश्वविद्यालय अक्षम साबित हो गया। इस घटना के बाद ही परिसर में बौद्धिक-सम्पदा की चोरी पर बहस जारी हो गयी थी। इसी बीच विश्वविद्यालय के प्रशासन ने निर्णय लिया कि निर्धारित मानकों के हिसाब से शोध या आँकड़े चोरी का आरोप सिद्ध होने पर शिक्षकों की तीन वेतनवृद्धि पर रोक, प्रशासनिक दायित्व से वंचित कर दस वर्षों के लिये शोध कार्य पर पाबंदी भी लगायी जा सकती है। इसी तरह साहित्यिक-चोरी के दोषी छात्र के शोध प्रबन्ध निरस्त करने, छात्रवृत्ति रोकने और भविष्य में दाखिले या नियुक्ति पर भी रोक लगा दी जायेगी।

संस्कृत में गणित : एक प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थ

संस्कृत में अंकगणित पर लिखी गई सबसे पुरानी रचना 'बख्शाली पांडुलिपि' है जिसे सम्भवत: सातवीं शताब्दी में संकलित किया गया होगा। इसे किसने संकलित किया, इसका कोई उल्लेख नहीं है।

हाल ही में कोलकाता की एशियाटिक सोसाइटी ने 'गणितावली' नामक ग्रन्थ का प्रकाशन करवाया है। इस ग्रन्थ की पुष्पिका से इतना जरूर पता चलता है कि सुखदास नामक एक कायस्थ ने रामपालदेव के शासनकाल में शक संवत 1615 या 1715 में यह पूरी सामग्री कहीं से हासिल की थी। इस सामग्री की एक अद्वितीय प्रति एशियाटिक सोसाइटी के संग्रह में सुरक्षित है। यह पूरी सामग्री बांग्ला में नहीं, देवनागरी लिपि में लिखी हुई है।

ग्रन्थ के शुरुआती पन्नों में कई खामियाँ हैं, हालांकि बाद के पन्नों में अधिकांश सामग्री सुवाच्य है। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय (वाराणसी) के सरस्वती भवन के विभूतिभूषण भट्टाचार्य ने काफी मेहनत के साथ इस सामग्री का सम्पादन किया, लेकिन दुर्भाग्य यह रहा कि उनका देहान्त हो गया। अन्तत: मानबेंदु बनर्जी और प्रदीप कुमार मजूमदार ने अंकगणित, प्रारम्भिक रेखागणित और क्षेत्रमिति (मापन) की सामग्री वाले इस ग्रन्थ का सम्पादन किया।

यह ज्योतिषियों की हैण्डबुक है जिसमें गणित व खगोल शास्त्र के कुछ विषय शामिल हैं। इस ग्रन्थ के अज्ञात लेखकों ने अपने शुरुआती वाक्यों में साफ कर दिया है कि यह पुस्तक उन कायस्थों या हिसाब-किताब रखने वालों के लिए है जो गणित का बेहद प्रारम्भिक ज्ञान हासिल करना चाहते हैं।

यह ग्रन्थ कारिका के रूप में लिखा गया है और छह अध्यायों में विभाजित है। सबसे पहले अध्याय में प्रस्तावना दी गई है जो इस ग्रन्थ को लिखे जाने के उद्देश्य पर प्रकाश डालती है। दूसरा अध्याय 'संख्याविधान' है जिसमें विभिन्न संख्याओं में मापन का उल्लेख किया गया है। इसकी शुरुआत 'यव' (जौ के बीज) से होती है। फिर 'अंगुली', वितस्ति या बालिश्त, हस्त डंडा (लट्ठा) जैसे मापों का वर्णन किया गया है। फिर कोस और योजन का उल्लेख है।

इसके बाद वजन के मापों का वर्णन है, खासकर चावल के वजन करने वाले माप। सुनारों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले मापों जैसे गुंजा, माशा, कर्शा और पल का भी उल्लेख किया गया है।

समय की माप के बारे में काफी रूखे ढंग से वर्णन किया गया है। इसके अनुसार एक दिन में 30 मुहूर्त होते हैं, जबकि 30 दिनों से एक माह और 12 माह से एक साल बनता है।

इसमें कुछ ऐसी मापें भी दी गई हैं जो अब प्रचलन में नहीं हैं जैसे वराटका, गंडक या गंडिक, काकिणी, पण, डल्लक इत्यादि। रोचक बात है कि घटीमान, द्रम्मकेदार और दीनार का भी उल्लेख है।

तीसरे अध्याय का नाम है 'परिभाषाविधि' जिसमें खासकर रेखागणित और अंकगणित से जुड़ी तकनीकी शब्दावली दी गई है। जैसे काया (सम्पूर्ण पिंड), अंशक (भाग), चेद, विश्कंभ, परिधि, भाजक, हरक इत्यादि।

चौथा अध्याय 'परिक्रमाविधि' विभिन्न अंकगणित समीकरणों व सूत्रों को समर्पित है।

पाँचवें अध्याय का नाम 'व्यवहारविधि' है जिसमें कई प्रकार के नियम जैसे तीन का नियम, पांच का नियम, गुणन, चक्रवृद्धि ब्याज की गणना आदि को समझाया गया है। साथ ही चतुर्भुज, त्रिभुज, वृत्त इत्यादि के बारे में भी संक्षेप में बताया गया है।

छठवें अध्याय में उदाहरणों के जरिए विभिन्न नियमों को समझाने का प्रयास किया गया है।

इस ग्रन्थ में कई कमियाँ निकाली जा सकती हैं। इसके बावजूद कहना पड़ेगा कि यह ग्रन्थ हजारों साल पहले उत्तर भारत में प्रचलित गणित के अध्ययन की एक झलक तो दिखलाता ही है।

ऑनलाइन पढ़िए किताबें

तकनीक के तेज प्रसार और इन्टरनेट के बढ़ते प्रभाव के कारण अब किताबों की दुनिया पर भी इसका प्रभाव नजर आने लगा है। पुस्तक प्रेमियों की भूख को शान्त करने के लिए अब ऑनलाइन किताबों के संग्रह उपलब्ध हैं। बस अपनी मनमर्जी की किताब खोलें और शुरू कर दें पढ़ना। जी हाँ Http://onlinebooks.library.upenn.edu/ एक ऐसी वेबसाइट है, जिस पर पुस्तक प्रेमियों के लिए 30,000 किताबों का संग्रह उपलब्ध है। बस क्लिक करें और शुरू हो जाएँ।

अब आ रही हैं एम-बुक्स

आप जल्द ही मोबाइल फोन पर अपनी मनपसन्द किताब भी पढ़ सकेंगे।

एशिया की सबसे बड़ी अंग्रेजी पुस्तक प्रकाशक *पेंगुइन इंडिया* ने मोबाइल टैक्नोलॉजी के ग्लोबल डेवलपर *मोबी-फ्यूजन* से टाइअप किया है, जिसके तहत वह अपनी तीन सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तकों को मोबाइल फोन के जरिये लोगों तक पहुँचाएगी। इन किताबों से प्रतिदिन एक पैसेज चुनकर मैसेज से उपभोक्ताओं को भेजे जाएँगे। इसके लिए एक से दो रुपये प्रतिदिन का चार्ज लिया जाएगा।

मोबी-फ्यूजन के अनुसार भारत में *एयरटेल, वोडाफोन, एस्सार, आइडिया, बीएसएनएल* और *स्पाइस* उपभोक्ता मैसेज व वेब पोर्टल सर्विस की सहायता से एम-बुक्स मोबाइल फोन पर डाउनलोड कर सकेंगे।

पब्लिशिंग इंडस्ट्री के कई एक्सपर्ट मानते हैं कि भारत में एम-बुक्स की शुरुआत ई-बुक्स के आने की केवल एक आहट भर है। जल्द ही वह भी आम आदमी के बीच आसानी से पहुँच सकेंगी।

भारतीय शैक्षणिक सेवा क्यों नहीं ?

पहली बार यह सवाल उठा है कि भारतीय प्रशासनिक सेवा की तर्ज पर भारतीय शैक्षणिक सेवा क्यों नहीं? यह सवाल उठाते हुए प्रसिद्ध साहित्यकार समीक्षक डॉ० नामवर सिंह विश्वविद्यालयों में व्याप्त शैक्षणिक भ्रष्टाचार पर आक्रोश व्यक्त करते हैं। इस प्रश्न की सापेक्षता में कवि-समीक्षक अशोक वाजपेयी का कहना था कि आज का छात्र 'अपडेट' है, वह विषय को पूरी तरह हृदयंगम करने के लिये अध्यापक से भी वैसी ही अपेक्षा रखता है, जबकि शिक्षा-संस्थानों में स्थितियाँ विपरीत हैं। डॉ० नामवर सिंह इन स्थितियों की भयावहता बतलाते हुए कहते हैं कि इन सवालों पर बहस होनी चाहिए और जितना जल्दी हो सके सरकार को आई०ए०एस० की तर्ज पर इंडियन एजुकेशनल सर्विसेज़ के बारे में भी सोचना चाहिए। तभी विश्वविद्यालयों के चरित्र एवं शैक्षणिक स्तर में परिवर्तन हो सकेगा।

अध्येताओं, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी – 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com

शिक्षाशास्त्र की महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

[बी०एड०, एम०एड०, बी०ए० (शिक्षा शास्त्र) एवं एम०ए० (शिक्षा शास्त्र) हेतु]

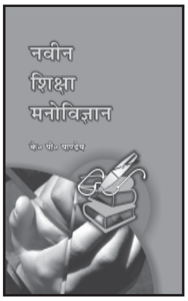

नवीन शिक्षा मनोविज्ञान

डॉ० के०पी० पाण्डेय

पृष्ठ : 488 **संस्करण :** 2007

नवीन शिक्षा मनोविज्ञान अपने क्षेत्र से सम्बन्धित अद्यतन अवधारणाओं के सम्यक् विश्लेषण एवं विवेचन पर आधारित प्रस्तुति है। इसके अन्तर्गत कुल सत्रह अध्याय हैं, जिनमें शिक्षा मनोविज्ञान के विषय-क्षेत्र एवं विधियों, विकास का मनोविज्ञान, अधिगम एवं अधिगम सिद्धान्त, शिक्षण-अधिगम सम्बन्धों, अभिप्रेरणा सिद्धान्तों, व्यक्तित्व एवं व्यक्तित्व के सिद्धान्तों, बुद्धि-संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं आध्यात्मिक के नवीनतम सम्प्रत्ययों एवं उनके शैक्षिक निहितार्थों, विशेष प्रकार के बालकों—प्रतिभाशाली, सर्जनशील, पिछड़े, मन्दितमना एवं अपचारी एवं समंजन के मनोविज्ञान के महत्त्वपूर्ण प्रतिमानों के बारे में विस्तारपूर्वक विवरण उपलब्ध हैं। पुस्तक के प्रत्येक अध्याय के अन्त में अधिगम-अभ्यास की व्यवस्था है जिससे इसकी 'स्व-अनुदेशनात्मक' क्षमता सहज ही अभिवृद्ध हो जाती है।

मूल्य : सजिल्द : **250.00** ISBN : 81-7124-415-7
अजिल्द : **150.00** ISBN : 81-7124-344-4

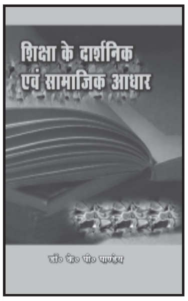

शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार

डॉ० के०पी० पाण्डेय

पृष्ठ : 340 **संस्करण :** 2007

प्रस्तुत ग्रन्थ में शिक्षा तथा दर्शनशास्त्र के विविध उपांगों के मध्य सम्बन्ध निरूपित करते हुए शिक्षा दर्शन के विविध सम्प्रदायों यथा—विचारवाद, यथार्थवाद, प्रयोजनवाद, प्रकृतिवाद, अस्तित्ववाद, विधेयात्मक सापेक्षवाद तथा तार्किक अनुभववाद की स्थापनाओं को भारतीय एवं पाश्चात्य सन्दर्भों में उनकी स्थिति तथा उनकी शिक्षा के लिये निहितार्थ एवं विशिष्ट महत्त्व प्रदर्शित किया गया है। इसके अतिरिक्त शिक्षा के उद्देश्य, उनका निर्धारण तथा उनकी प्रकारता-सामान्य तथा विशिष्ट, सामाजिक तथा व्यक्तिगत, समीपस्थ तथा चरम एवं प्रजातान्त्रिक तथा सर्वाधिकारवादी दृष्टि के सम्बन्ध में व्याख्या देते हुए, शिक्षा के औपचारिक, अनौपचारिक एवं प्रासंगिक (आनुषंगिक) स्वरूपों का अर्थ एवं दार्शनिक आधार स्पष्ट किया गया है तथा 'डी-स्कूलिंग' की अवधारणा एवं अनुशासन और स्वतन्त्रता जैसे सम्प्रत्ययों के दार्शनिक निहितार्थ सूक्ष्मतापूर्वक विश्लेषित किए गए हैं।

मूल्य : सजिल्द : **250.00** ISBN : 81-7124-425-4
अजिल्द : **150.00** ISBN : 81-7124-426-2

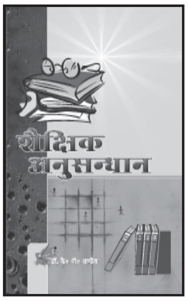

शैक्षिक अनुसन्धान

डॉ० के०पी० पाण्डेय

पृष्ठ : 304 **संस्करण :** 2007

शैक्षिक परिस्थितियों की रहस्यात्मकता का उद्घाटन प्रत्येक प्रबुद्ध शिक्षाशास्त्री की संकल्पना का केन्द्रवर्ती बिन्दु होता है। हमारी शिक्षा-व्यवस्थाओं का जाल जिस द्रुत गति से बढ़ा है, उनकी उपादेयता एवं प्रभाविता के सम्बन्ध में चिन्ता भी मुखर हुई है। इस पहलू के गवेषणात्मक अध्ययन के लिए ही शैक्षिक अनुसन्धान की जरूरत पड़ती है।

भारतीय सन्दर्भ की विशेषताओं को सामने रखकर प्रस्तुत ग्रन्थ में शैक्षिक अनुसन्धान विधि के व्यावहारिक पक्षों को प्राथमिकता दी गयी है जिससे सेवारत एवं नव्य शिक्षक अनुसन्धान की ओर सहज रूप में प्रवृत्त हो सकें। शैक्षिक शोध के भारतीय परिप्रेक्ष्य, अभिप्राय, क्षेत्र, प्रणाली तथा शोध-प्रबन्ध एवं शोध की रूपरेखा प्रस्तुति हेतु आवश्यक सुझाव प्रत्येक अध्याय में दिए गए हैं।

मूल्य : सजिल्द : **180.00** ISBN : 81-7124-421-1
अजिल्द : **100.00** ISBN : 81-7124-422-x

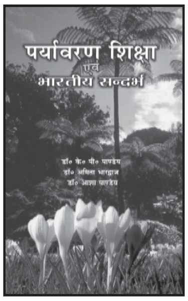

पर्यावरण शिक्षा एवं भारतीय सन्दर्भ

डॉ० के०पी० पाण्डेय, डॉ० अमिता, डॉ० आशा

पृष्ठ : 334 **संस्करण :** 2007

पर्यावरण सुरक्षा और पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम आज पूरे विश्व की चिन्ता का मुख्य विषय है, निरन्तर बढ़ती हुई जनसंख्या और प्रकृति के दोहन ने जीवमात्र के लिए भयावह स्थिति उत्पन्न कर दी है।

इसी दृष्टि से इस पुस्तक में इक्कीसवीं सदी में पर्यावरण सम्बन्धी उभरते नवीन सन्दर्भों की समस्याओं के प्रति सजग एवं सचेत करते हुए उससे उबरने की युक्तियाँ बताई गई हैं।

पर्यावरण शिक्षा के विविध कार्यक्रमों एवं योजनाओं को पूरे विश्व के परिप्रेक्ष्य में दृष्टिगत रखते हुए यह अनुशीलन प्रस्तुत किया गया है जिससे यह छात्रों और पर्यावरण के प्रति सजग पाठकों के लिए प्रेरणास्पद हो सके।

मूल्य : सजिल्द : **250.00** ISBN : 81-7124-442-4
अजिल्द : **150.00** ISBN : 81-7124-443-4

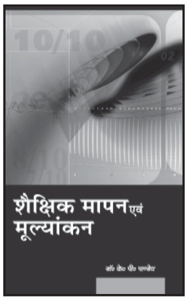

शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन

डॉ० के०पी० पाण्डेय

पृष्ठ : 252 **संस्करण :** 2007

प्रस्तुत पुस्तक में शिक्षण एवं परीक्षण की क्रिया को उद्देश्यमुखी बनाने के प्रति एक दृष्टिकोण रखा गया है। लेखक का यह विश्वास है कि शिक्षण एक गतिशील क्रिया है। अतः इसके अन्तर्गत पाठ्यक्रम, पाठ्य-पुस्तकों, शिक्षण विधियों तथा अन्य शैक्षणिक उपकरणों की व्यवस्था इस प्रकार की जाए जिससे कक्षा में बालकों को मानसिक चुनौतियाँ प्राप्त हों और वे सक्रिय ढंग से सीखने की क्रियाओं तथा अनुभवों की ओर उन्मुख हो सकें। इसके लिए परीक्षण की क्रिया में विश्वसनीयता तथा वैधता लाकर बालक की शैक्षणिक उपलब्धियों का मूल्यांकन करने में सजग दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है।

मूल्य : सजिल्द : **150.00** ISBN : 81-7124-551-x
अजिल्द : **100.00** ISBN : 81-7124-552-8

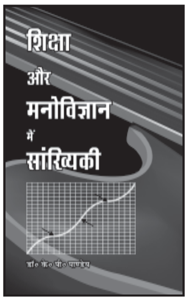

शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी

डॉ० के०पी० पाण्डेय

पृष्ठ : 224 **संस्करण :** 2007

प्रस्तुत पुस्तक 'शिक्षा एवं मनोविज्ञान' में प्रयुक्त होने वाली सांख्यिकी विधियों का सोदाहरण एवं स्पष्ट विवरण उपलब्ध कराने की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी एवं लोकप्रिय रचना है। कुल ग्यारह अध्यायों में सांख्यिकी विधियों के अनुप्रयोग, उनमें निहित

मान्यताओं तथा अपेक्षित सावधानियों के प्रति संवेदनशीलता एवं सतर्कता विकसित करने में यह एक प्रभावी उपकरण के रूप में अभिकल्पित है। इसमें वर्णनात्मक एवं अनुमानपरक सांख्यिकी के तरीकों को शोध की परिस्थितियों से जोड़कर विद्यार्थियों की शोध–आधारित प्रदत्तों के विश्लेषण सम्बन्धी कौशल एवं अन्तर्दृष्टि को पैनी बनाने का प्रयास किया गया है।

मूल्य :	सजिल्द	: **150.00**	ISBN : 81-7124-448-3
	अजिल्द	: **100.00**	ISBN : 81-7124-449-1

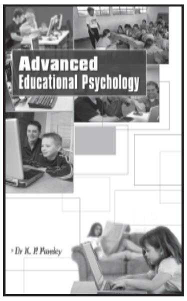

ADVANCED EDUCATIONAL PSYCHOLOGY

Dr. K.P. Pandey

Page : 600 **Edition :** 2007

The present edition of Advanced Educational Psychology has been thoroughly updated, reviewed and enlarged in consonance with the fast developments of the corpus of psychological knowledge as evident from the new entries in the field of Educational psychology. The entire write up is designed in a modular form with an inbuilt arrangement for self assessment and feedback. The book is divided into eighteen chapters which encompass the major fields of the discipline as at present.

Price :	H.B.	: **450.00**	ISBN : 81-7124-555-2
	P.B.	: **300.00**	ISBN : 81-7124-556-0

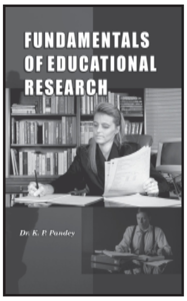

FUNAMENTALS OF EDUCATIOAL RESEARCH

Dr. K.P. Pandey

Page : 398 **Edition :** 2007

The present edition is an updated and completely improved version of the earlier editions. It now comprises 15 chapters in all. It embodies new themes pertaining to qualitative research, latest data collection devices used in educational research and various non-parametric tests being currently promoted and used by researchers in the professional courses of behavioural sciences including education and psychology.

There are exemplifications galore and throughout the book indian case references predominate so as to suitably orient the readers and practitioners of educational research for quality thrusts in their pursuits.

Price :	H.B.	: **450.00**	ISBN : 81-7124-414-9
	P.B.	: **250.00**	ISBN : 81-7124-399-1

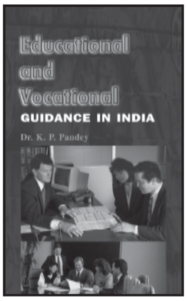

EDUCATIONAL AND VOCATIONAL GUIDANCE IN INDIA

Dr. K.P. Pandey

Page : 256 **Edition :** 2007

The book explores the possibility of providing objective and enlightened procedures of guidance and counselling to our youth in the rural as well as the urban habitats. The entire write up consists of seven different chapters and is presented with clarity and conviction. It encompasses discussions on the fundamental concepts, needs, significance and scope of guidance, the various types of guidance, educational, vocational and personalgermane to the 21st century world of work and the new clientele, the basic assumptions underlying guidance processes, the techniques of guidance and counselling, the guidance services-their operational constraints and limitations, the evaluation and recording devices used in guidance and the developing new occupational scenario in India.

Price :	H.B.	: **300.00**	ISBN : 81-7124-416-5
	P.B.	: **150.00**	ISBN : 81-7124-417-3

TEACHING OF ENGLISH IN INDIA

Dr. K.P. Pandey

Page : 268 **Edition :** 2007

The book constitutes a fresh venture at synthesising the insights drawn from linguistic and pedagogic models available on the basis of systematic reasearches and experiments in respect of Teaching of English in India. It consists of fourteen chapters.

Price :	H.B.	: **300.00**	ISBN : 81-7124-218-9
	P.B.	: **150.00**	ISBN : 81-7124-545-5

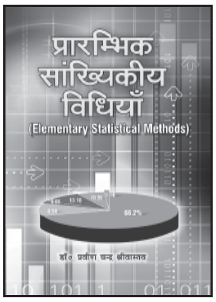

प्रारम्भिक सांख्यिकीय विधियाँ

डॉ० प्रवीणचन्द्र श्रीवास्तव

पृष्ठ : 282 **संस्करण :** 2007

वर्तमान में शिक्षा का परिदृश्य अत्यन्त परिवर्तित हो चुका है। 'शिक्षक–केन्द्रित व्यवस्था' के स्थान पर 'छात्र–केन्द्रित व्यवस्था' तथा 'शिक्षण' के स्थान पर 'अधिगम' को अधिक महत्त्व दिया जाने लगा है।

परम्परागत पाठ्य पुस्तकें छात्रों में अधिगम जनित कराने में सर्वथा असमर्थ हैं। इन परिस्थितियों में ऐसी पुस्तकों की नितान्त आवश्यकता है जो छात्रों को अभिप्रेरित करते हुए उनमें व्यवहारगत परिवर्तन ला सकें। प्रत्येक अध्याय के प्रारम्भ में ही अनुदेशनात्मक उद्देश्यों को निर्धारित कर दिया है तथा विषय वस्तु को छोटे–छोटे अंशों में एक–दूसरे से सम्बन्ध स्थापित करते हुए प्रस्तुत किया है। प्रत्येक अंश में छात्र को सक्रिय अनुक्रिया करने के लिए बाध्य किया गया है तथा समवर्ती मूल्यांकन का प्रयोग करते हुए स्वमूल्यांकन की विधा को स्थापित करने का प्रयास किया गया है।

मूल्य :	सजिल्द	: **280.00**	ISBN : 978-81-7124-632-8
	अजिल्द	: **180.00**	ISBN : 978-81-7124-633-5

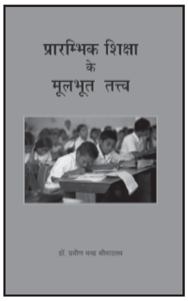

प्रारम्भिक शिक्षा के मूलभूत तत्त्व

डॉ० प्रवीणचन्द्र श्रीवास्तव

पृष्ठ : 192 **संस्करण :** 2007

प्राथमिक शिक्षा समस्त शिक्षा–व्यवस्था की आधारशिला है। आज शिक्षा अपने सामाजिक दायित्वों की पूर्ति करने में पूर्णतया असफल है। आज हम उस पूर्णता को प्राप्त नहीं कर पाये हैं जिसकी अपेक्षा शिक्षा– व्यवस्था से की जा रही है। अधिकांश व्यक्ति

शिक्षा के वास्तविक अर्थ को समझने में असमर्थ हैं। सम्पूर्ण मानव समाज आज अपने को असुरक्षित महसूस कर रहा है। यदि कहीं से कोई आशा की जा सकती है तो वह बच्चों से ही की जा सकती है। वे ही इस देश के भविष्य हैं। यदि सचमुच एक नये संसार की रचना करनी है तो शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए प्रस्फुटन और बच्चों में छिपी प्रतिभाओं का विकास।

प्रस्तुत पुस्तक में प्राथमिक शिक्षा से सम्बन्धित समस्त परियोजनाओं, महत्त्वपूर्ण आँकड़ों आदि को सुव्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्राथमिक शिक्षा के सन्दर्भ में इस पुस्तक में अद्यतन जानकारी उपलब्ध करायी गई है।

मूल्य : सजिल्द : **200.00** ISBN : 81-7124-506-4
अजिल्द : **120.00** ISBN : 81-7124-505-6

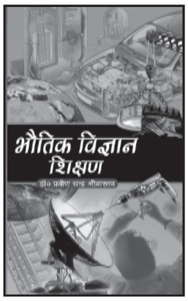

भौतिक विज्ञान शिक्षण

डॉ० प्रवीणचन्द्र श्रीवास्तव

पृष्ठ : 236 **संस्करण :** 2007

इस पुस्तक में आधुनिक विज्ञान की प्रकृति, महत्त्व एवं विकास से प्रारम्भ कर विभिन्न कालांशों में विज्ञान-शिक्षण के उद्देश्य एवं विकास, विज्ञान-पाठ्यक्रम विकास, विज्ञान-शिक्षण की अद्यतन विधियाँ, विज्ञान-शिक्षण के प्रमुख अनुदेशात्मक-प्रतिमान, विज्ञान-शिक्षण के कौशल, पाठ-योजना का विकास, विज्ञान-शिक्षण में प्रयुक्त शिक्षण-सहायक-सामग्री, विज्ञान-शिक्षण में सूचना प्रौद्योगिकी, विज्ञान-शिक्षण के अनौपचारिक उपागम, विज्ञान-संग्रहालय, एक्वेरियम, वाइवेरियम तथा विद्यालय-उद्यान, भौतिक-विज्ञान प्रयोगशाला तथा विज्ञान-शिक्षण में मूल्यांकन तक की यात्रा का वर्णन सहज एवं आकर्षक शैली में प्रस्तुत किया गया है। विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए भौतिकी के मूल सम्प्रत्ययों को भी इस पुस्तक में स्थान दिया गया है। इसके साथ ही भौतिकी तथा रसायन-शास्त्र के कुछ विशिष्ट प्रकरणों पर पाठ-योजना के नमूने भी प्रस्तुत किये गए हैं।

मूल्य : सजिल्द : **120.00** ISBN : 81-7124-516-1
अजिल्द : **80.00** ISBN : 81-7124-515-3

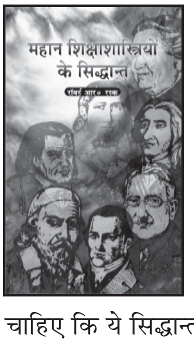

महान शिक्षाशास्त्रियों के सिद्धान्त

रॉबर्ट आर० रस्क

पृष्ठ : 336 **संस्करण :** 2007

काल विशेष में समुद्भूत शिक्षा सम्बन्धी सिद्धान्त उस समय की बौद्धिक और सामाजिक प्रवृत्तियों से किस प्रकार सम्बन्धित रहते हैं इसकी व्याख्या ही शिक्षा के इतिहास का उद्देश्य होना चाहिए। साथ ही इतिहास को इन सिद्धान्तों की व्याख्या भी करनी चाहिए और बताना चाहिए कि ये सिद्धान्त किस प्रकार शैक्षिक प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। इस पुस्तक के बारे में यह दावा नहीं किया जा सकता कि यह शिक्षा का इतिहास है; इसमें कुछ थोड़े से प्रतिनिधि शिक्षकों के मतों की व्याख्या मात्र है। अध्यायों का क्रम ऐसा रखा गया है कि पाठकों को महान् शिक्षकों की मूल रचनाओं का सहारा लिये बिना भी उनके एतद्विषयक मतों का सामान्य बोध हो जाय। इसमें प्लेटो, क्विण्टिलियन, इलियट, लोयोला, कोमेनियस, मिल्टन, लॉक, रूसो, पेस्टालॉजी, हरबर्ट, फ्रोबेल, मॉण्टेसरी, जॉन डेवी के विचार व सिद्धान्त हैं।

मूल्य : अजिल्द : **100.00** ISBN : 81-7124-419-x

संसार के महान शिक्षाशास्त्री

डॉ० इन्द्रा ग्रोवर

पृष्ठ : 292 **संस्करण :** 2007

सभी विश्वविद्यालयों में विश्व के महान शिक्षाविदों व विचारकों पर अवश्य पठन-पाठन का निर्देश है। प्रस्तुत पुस्तक पाश्चात्य विचारकों के साथ भारतीय विचारधारा की समीक्षा देती है। इसमें विख्यात पाश्चात्य शिक्षाविदों प्लेटो, जॉन अमॉस कमीनियस, रूसो, पेस्टालाट्सी, हरबार्ट, फ्रोबेल, हरबर्ट स्पेन्सर, मॉन्टेसरी, जॉन ड्यूई, ऐनी बेसेण्ट, रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गाँधी, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्द घोष, पं० मदनमोहन मालवीय के दर्शन एवं विस्तृत विवरण हैं।

मूल्य : अजिल्द : **60.00** ISBN : 81-7124-276-6

कलागुरु केदार शर्मा के व्यंग्य-चित्रों में काशी

(व्यंग्य)

डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह

प्रथम संस्करण : 2005

पृष्ठ : 312

सजिल्द: रु० 300.00/ ISBN: 81-7124-395-9
अजिल्द: रु० 200.00/ ISBN: 81-7124-463-7
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

'बनारसी' न तो प्राचीन काशी निवासी को कहा जा सकता है, न अर्वाचीन वाराणसीवासी को। बनारसी बनारस का वह जीव है जो काशी की प्राचीन हवा खा चुका हो। मुगलों की चढ़ाई-उतराई देखा हो। नवाबों की नवाबी ऐयाशी की कहानी पढ़ी हो। आशिकमिजाज हो, अंग्रेजों की गुलामी के दिन काट चुका हो। वैसे बनारसी आज के वाराणसी में कम होते जा रहे हैं। सच्चे बनारसी केवल वे ही हैं, जो संस्कृत-हिन्दी में 'ओना मासी धम, बाप पढ़े न हम' हो। जिनके लिए अरबी-फारसी 'अलिफ, बे हौवा, माँ चील्ह बाप कौवा' हो। अंग्रेजी ए-बी-सी-डी जिन्हें 'काला अक्षर भैंस' दिखाई देता हो। जो टीम-टामवाले वस्त्र धारण करने वाला न हो। केवल एक अंगोछा पहनकर दूसरे को कन्धे पर रख लेता हो और चौक बाजार, नगर में इसी वेश-भूषा में कहीं भी घूम-फिर सकता हो। तीज-त्यौहार के दिन जो घुटनों तक धोती, चुस्त गंजी पर मलमली कुरता धारण करता हो और कन्धों पर एक अंगोछा रख लेता हो। किसी शौकीन के दूसरे कन्धे पर जिसे भगवान् ने दिया है—मद्रासी सेल्हा अथवा नागपुरी दुपट्टा भी हो सकता है। गर्मी के दिनों में एक बहुत छोटा ताड़ का पंखा साथ रखता हो। जिसके हाथ में बाँस की एक सुबुक पोरदार छड़ी शोभायमान हो। मुख में पान के बीड़े जमें हों। शरीर में जोम हो। दिमाग में बूटी की तरंग हो। आँखों में तरंगायित लाल डोरियाँ उभर आयी हों। जिनके ललाट पर कंकड़ का श्वेत खौर, भस्म का त्रिपुण्ड्र, चन्दन का गोल टीका या महाबीरी चमक रहा हो। जो जरा झूमकर चलता हो, बात-बात में 'सरवा' आदि कुसंस्कृत शब्दों का तकियाकलाम लगाता हो। शास्त्रीय ज्ञान का प्रकाण्ड पण्डित हो पर साधारण और व्यावहारिक ज्ञान में कोरा हो। जो नवीनता करता हो, पुरानी बातों और विचारों को जो वेदवाक्य समझता हो, जो अपने धार्मिक ढकोसले की धाक जमाता हो, जिसकी विवेक-बुद्धि संकीर्ण हो, तुनुक-मिजाज हो, नाक लगाता हो, नाक पर मक्खी बैठ जाने पर जो नाक को ही दोषी मानता हो और स्वामी करपात्रीजी की तरह अपनी नाक काट फेंकने का दावा रखता हो वही पक्का और सहज बनारसी है।

इस पुस्तक में कलागुरु केदार शर्मा के जीवन, कला, साहित्य और उन पर लिखे गए संस्मरण को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

पुस्तक परिचय

नई पुस्तकें : अब उपलब्ध

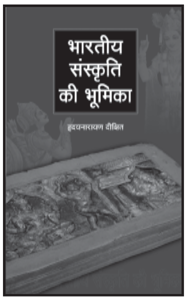

भारतीय संस्कृति की भूमिका

(भारतीय इतिहास, संस्कृति, अध्यात्म, चिंतन की गहन व्याख्या)

हृदयनारायण दीक्षित

प्रथम संस्करण : 2008

पृष्ठ : 244

सजिल्द: रु० 250.00/ ISBN: 978-81-7124-625-0

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

आधुनिक भारत की संस्कृति पर संकट है। भरत, भरतजन के अस्तित्व पर संकट है। कोई पूछे कि कहाँ गये भरतवंशी? विश्वामित्र, अंगिरस, वशिष्ठ, श्वेतकेतु, इक्ष्वाकु, दशरथ, व्यास और रामकृष्ण के वंशज? कहाँ गई वेदवाणी? कहाँ गया उपनिषद् का दर्शन? कहाँ गये आदि शंकराचार्य? सब तरफ यूरोप, अमेरिका। कहाँ गये चाणक्य? एलोपैथी सिर पर सवार है। कहाँ गए चरक? भोग संस्कृति घर-आँगन में है। कहाँ गया हिरण्यगर्भ और पतंजलि का योग? मार्क्सवाद, पूँजीवाद का प्रेत पीछा कर रहा है। कहाँ गए कपिल, कणाद? गंगा कचरा-पेटी बन रही है। कहाँ गये भगीरथ के लोग। यमुना गंदगी से भरपूर है, कहाँ गये कान्हा? पर्यावरण प्रदूषण का नाग कौन नाथेगा? ऐसे सभी प्रश्न हृदय के मर्मस्थल पर तीर की तरह चुभते हैं। इन सबका उत्तर है—प्राचीन वैदिक दर्शन का ज्ञान, भारतीय संस्कृति का संवर्द्धन और संरक्षण। संस्कृति के प्रति आग्रही गौरवबोध और इतिहासबोध।

इस ग्रन्थ के सभी 25 लेख भारतीय संस्कृति के इर्द-गिर्द घूम रहे हैं। यह पुस्तक भारतीय संस्कृति, धर्म और दर्शन की पुनर्प्रस्तुति है। भारतीय संस्कृति से ही भारत है। विदेशी प्रयास भारतीयों को भारत से अलग करने का है। इस पुस्तक का प्रयोजन है—'महापुरुषों के मार्ग की ओर संकेत करना, श्रेष्ठजनों के आचरण से भारतीय जन को परिचित कराना और सनातन भारत की मेधा की खोज करना।'

हंस (आत्मकथांक)
(1932 ई०)

सम्पादक : **प्रेमचंद**

प्रथम संस्करण : 1932 ई०

प्रथम आवृत्ति : 2008 ई०

पृष्ठ : 208

अजिल्द: रु० 180.00/ ISBN: 978-81-7124-631-1

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद के सम्पादन में **हंस** का प्रकाशन मार्च, 1930 में वसंत पंचमी के दिन प्रारम्भ हुआ था। देशप्रेम, साहित्यिक अभिरुचि एवं साहित्य सेवा की अदम्य लालसा ने उन्हें काशी से एक साहित्यिक पत्रिका निकालने के लिए प्रेरित किया। प्रकाशन के पूर्व उन्होंने अपने मित्र सुप्रसिद्ध कवि जयशंकर प्रसादजी को पत्र लिखा—"*काशी से कोई साहित्यिक पत्रिका न निकलती थी। मैं धनी नहीं हूँ, मजदूर आदमी हूँ, मैंने **हंस** निकालने का निश्चय कर लिया है।*" **हंस** का नामकरण जयशंकर प्रसादजी ने ही किया था।

1932 ई० में प्रकाशित **हंस** का यह विशेषांक '**आत्मकथा अंक**' दशकों से अप्राप्य था, पाठक ऐसे ही स्तरीय, विलुप्त हो चले, पठनीय साहित्य की तलाश में हैं। वर्तमान समय में इस ग्रन्थ की उपादेयता कहीं अधिक बढ़ जाती है। आज पाठकों, अध्येताओं की बहुप्रतीक्षित उत्कट अभिलाषा पूर्ण हो रही है।

आज हम यत्र-तत्र आत्मकथा और संस्मरणों का जो दौर देखते हैं उसका जनक था **हंस** का यह 'आत्मकथा अंक'। जयशंकर प्रसाद, रायसाहब लाला सीतारामजी, पं० रामचन्द्र शुक्ल, पं० रामनारायणजी मिश्र, पं० विनोदशंकर व्यास, श्री शिवपूजन सहायजी, श्री रायकृष्णदासजी, श्री धीरेन्द्र वर्मा, गोपाल राम गहमरी (सम्पादक : जासूस), बद्रीनाथ भट्ट, सद्‌गुरुशरणजी उपाध्याय (सम्पादक : वेदोदय), प्रेमचंद बी०ए० आदि अनेकानेक हिन्दी के मूर्धन्य विद्वानों के आत्मकथानक (जीवन-वृत्त) आज के पाठकों के लिए संजीवनी का कार्य करेंगे।

साहित्यिक निबन्ध

(साहित्य की विभिन्न विधाओं पर महत्त्वपूर्ण निबन्धों का संग्रह)

प्रो० त्रिभुवन सिंह
प्रो० विजयबहादुर सिंह

संशोधित तथा परिवर्द्धित चतुर्थ संस्करण : 2008

पृष्ठ : 783

सजिल्द: रु० 500.00/ ISBN: 978-81-7124-621-2
अजिल्द: रु० 350.00/ ISBN: 978-81-7124-622-9

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

यह कृति वस्तुत: एक कृति नहीं है अपितु हिन्दी साहित्य और आलोचना जगत के ख्यातिलब्ध कर्त्ताओं की एक विशिष्ट और अद्वितीय सर्जना है। इसमें हिन्दी साहित्य के इतिहास, समीक्षा-सिद्धान्त, विशिष्ट रचनाकारों, विविध साहित्य रूपों तथा हिन्दी के कुछ चर्चित विषयों के साथ ही अनेक अधुनातन विधाओं जैसे—पत्रकारिता, प्रयोजनमूलक हिन्दी, सूचना प्रौद्योगिकी और अनुवाद आदि विषयों पर अधिकारी विद्वानों के लेख हैं। एक साथ साहित्य और उससे जुड़ी अनेक विधाओं पर उत्कृष्ट आलेखों का संचयन ही इसकी उपलब्धि है। इसीलिए जहाँ इस कृति का समीक्षा जगत में विशेष आदर होगा वहीं दूसरी ओर स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पी०सी०एस०, आई०ए०एस० जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रतिभागियों के लिए भी यह सहायक सिद्ध होगी।

साहित्यिक निबन्ध का तृतीय संस्करण सन् 1985 में प्रकाशित हुआ था जो शीघ्र ही समाप्त हो गया। पिछले 20 वर्षों से पाठकों को पुस्तक तो नहीं उपलब्ध हो सकी पर माँग बराबर बनी रही। इस बीच प्रभूत साहित्य सामने आया है और उसके विचार-विमर्श का तौर-तरीका भी बदला है। अत: इसके संशोधन एवं परिवर्धन की आवश्यकता का भी अनुभव किया गया। इसे प्रासंगिक बनाने के लिए नवीन प्रवृत्तियों और रचनाओं पर अनेक सारगर्भित निबन्ध जोड़े गये हैं, साथ ही पूर्व प्रकाशित अधिकांश निबन्धों को भी तद्वत ले लिया गया है। इस प्रकार प्रस्तुत है 'साहित्यिक निबन्ध' का यह परिवर्धित और संशोधित संस्करण।

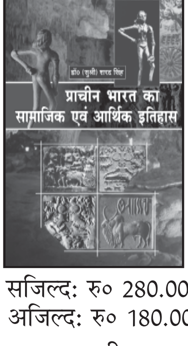

प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास

(प्राचीन इतिहास)

डॉ० (सुश्री) शरद सिंह

प्रथम संस्करण : 2008

पृष्ठ : 364

सजिल्द: रु० 280.00/ ISBN: 978-81-7124-592-5
अजिल्द: रु० 180.00/ ISBN: 978-81-7124-593-2

इस पुस्तक के प्रथम खण्ड में सामाजिक दशा का दिग्दर्शन कराया गया है, जिसके अन्तर्गत तत्कालीन वर्ण-व्यवस्था, जाति-प्रथा के साथ-साथ परिवार की संरचना का भी वर्णन है। विविध संस्कार और उनकी सामाजिक उपयोगिता के अतिरिक्त लेखिका ने मनुष्य के कर्त्तव्यों का भी बोध कराया है। आहार-विहार के साथ ही जीवन में कला की सार्थकता तथा उसके स्वरूप पर भी प्रकाश डाला गया है। पुस्तक में भारतीय समाज के दोषों यथा—जाति-प्रथा, ऊँच-नीच की भावना और अस्पृश्यता आदि का भी वर्णन करना लेखिका नहीं भूली हैं।

पुस्तक का दूसरा खण्ड आर्थिक जीवन से सम्बन्धित है। कृषि, भारत में जीवन-यापन का प्रमुख साधन रहा है जिससे सम्बन्धित क्षेत्र (खेत), उनका स्वामित्व, कृषि-कार्य तथा स्पादों का सटीक वर्णन पुस्तक में प्राप्त होता है। उद्योग-धन्धों की उपादेयता तथा उनके प्रकार, श्रेणी और नियमों, विनिमय के साधन, वाणिज्य, वणिक और पण्य पर भी भली-भाँति प्रकाश डाला गया है।

सम्मान-पुरस्कार

नर्मदाप्रसाद उपाध्याय को 'शिमेंगर लेडर फेलोशिप'

लब्धप्रतिष्ठ निबन्धकार तथा कलाविद् श्री नर्मदाप्रसाद उपाध्याय को जर्मनी की प्रतिष्ठित 'शिमेंगर लेडर फेलोशिप' प्रदान की गई। इसके अन्तर्गत श्री उपाध्याय दो माह इटली, स्पेन, फ्रांस, जर्मनी, इंग्लैण्ड, ऑस्ट्रेलिया सहित यूरोप के विभिन्न देशों की यात्रा करेंगे तथा वहाँ के विश्वविद्यालयों, कलावीथिकाओं तथा संग्रहालयों में भारतीय लघुचित्रों, विशेषकर मध्य भारत के लघुचित्रों, भारतीय सौन्दर्यशास्त्र तथा कला और साहित्य के अन्तर्सम्बन्धों पर व्याख्यान व चित्रमय प्रस्तुतीकरण देंगे।

भारतीय लेखिका को कॉमनवेल्थ का पुरस्कार

भारत में जनमी और फ्रांस में रहनेवाली भारतीय लेखिका **इंद्रा सिन्हा** के उपन्यास 'एनिमल्स पीपुल' को कॉमनवेल्थ के यूरोप और एशिया क्षेत्रीय लेखन का 'बेस्ट बुक' पुरस्कार प्राप्त हुआ है। यह उपन्यास 1984 की भोपाल गैस त्रासदी पर आधारित है। गत वर्ष इस उपन्यास को 'बुकर पुरस्कार' के लिए भी नामित किया गया था।

महाश्वेता देवी को 'भारतीय भाषा परिषद सम्मान'

सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रो० यू०आर० अनंतमूर्ति ने बँगला की प्रख्यात लेखिका **श्रीमती महाश्वेता देवी** को भारतीय भाषा परिषद्, कोलकाता के विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया, इसके अन्तर्गत 51 हजार रुपये की राशि प्रदान की गई, जो महाश्वेताजी ने पुरुलिया की खेड़िया-शबर कल्याण समिति को भेंट कर दी।

निर्मला पुतुल और कात्यायनी को पुरस्कार

राग-विराग कला केन्द्र द्वारा आयोजित समारोह में युवा कवयित्री **सुश्री निर्मला पुतुल** को उनके कविता संग्रह 'नगाड़े की तरह बजते शब्द' के लिए **शीला सिद्धांतकर स्मृति पुरस्कार** तथा **सुश्री कात्यायनी** को उनकी गद्य कृति 'कुछ जीवन, कुछ ज्वलंत' के लिए **अपराजिता स्मृति पुरस्कार** से सम्मानित किया गया।

'साहित्यश्री सम्मान' समारोह सम्पन्न

विगत दिनों दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा आयोजित '**साहित्यश्री सम्मान**' समारोह में **आचार्य सोहनलाल रामरंग** को '**भारतीय मनीषा सम्मान**', **डॉ० पूरनचंद टंडन** को '**साहित्यकार सम्मान**', **श्री ज्ञानेश्वर मुले** को '**हिन्दीतर भाषी हिन्दी साहित्यकार सम्मान**', **श्री कृष्ण मित्र** को '**राष्ट्रीय चेतना के संवाहक गीतकार सम्मान**', **सुश्री उषा पाहवा** को '**पत्रकारिता सम्मान**', **न्यायमूर्ति श्री नैपाल सिंह** को '**हिन्दीसेवी न्यायाधीश सम्मान**', **श्री ईश्वरप्रसाद गुप्ता** को '**हिन्दीसेवी सम्मान**', **डॉ० सुधांशु व्रती** को '**हिन्दी वैज्ञानिक सम्मान**', **श्री सुभाष लखोटिया** को '**हिन्दी विधिवेत्ता**' एवं **श्री सगीर खान जायसवाल** को '**हिन्दी प्रेमी अनुसंधानकर्त्ता सम्मान**' से सम्मानित किया गया। दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन के वरिष्ठ सदस्य **श्री दीवानचंद बंसल** को विशेष सम्मान दिया गया।

डॉ० गणेशदत्त सारस्वत सम्मानित

निबन्ध के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान एवं निबन्ध संग्रह 'निकष' के उत्कृष्ट प्रणयन के लिए 'हिन्दी सभा, सीतापुर (उत्तर प्रदेश)' के अध्यक्ष तथा 'मानस चन्दन' सम्पादक **डॉ० गणेशदत्त सारस्वत** को जबलपुर की संस्था 'कादम्बरी' द्वारा सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया।

श्रीमती लक्ष्मी शर्मा न्यूयार्क में अभिनंदित

न्यूयार्क। विश्व हिन्दी न्यास द्वारा आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर नर्मदा की सह सम्पादक **श्रीमती लक्ष्मी शर्मा** की साहित्यिक उपलब्धियों की प्रशंसा करते हुए उनका अभिनंदन किया गया। इस मौके पर आयोजित गाँधी और हिन्दी विषय पर एक संगोष्ठी तथा अंतर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

विश्व हिन्दी न्यास के अध्यक्ष डॉ० राम चौधरी ने श्रीमती शर्मा को शॉल, श्रीफल, तथा प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया। श्रीमती लक्ष्मी शर्मा ने अपनी रचनाधर्मिता के उत्स पर प्रकाश डालते हुए मानवीय संवेदनाओं को साहित्य और साहित्यकार के लिये सर्वोपरि बताया।

नासिरा शर्मा को ब्रिटेन का कथा सम्मान

नई दिल्ली। हिन्दी की प्रसिद्ध लेखिका **नासिरा शर्मा** को वर्ष 2007 के लिए ब्रिटेन का '**अन्तर्राष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान**' दिया जायेगा। यह सम्मान उनके चर्चित उपन्यास 'कुइयां जान' के लिए 27 जून को ब्रिटिश संसद के ऊपरी सदन—हाउस ऑफ लाड्र्स में दिया जायेगा। नासिरा शर्मा की प्रकाशित कृतियों में सात नदियाँ एक समंदर, पत्थर गली, सबीना के चालीस चोर, औरत के लिए औरत, शाल्मली, खुदा की वापसी प्रमुख हैं।

ज्योतिष जोशी को 'देवीशंकर अवस्थी सम्मान'

साहित्य अकादमी सभागार में आयोजित समारोह में **ज्योतिष जोशी** को 12वाँ '**देवीशंकर अवस्थी सम्मान**' उनकी आलोचना-पुस्तक 'उपन्यास की समकालीनता' के लिए दिया गया। इस सम्मान के अंतर्गत प्रशस्ति पत्र, प्रशस्ति चिह्न और पाँच हजार रुपये दिए जाते हैं।

कामसूत्र पर किताब पुरस्कार के लिए नामित

प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक इतिहास के तहत भारतीय शास्त्रीय ग्रन्थ 'कामसूत्र' पर आधारित पुस्तक लिखने वाले युवा ब्रिटिश लेखक को 'यंग राइटर ऑफ द ईयर' के लिए नामित किया गया है। यह पुरस्कार ब्रिटेन के एक प्रमुख अखबार द्वारा दिया जाता है। 'द बुक ऑफ लव-इन सर्च ऑफ द कामसूत्र' के लेखक 34 वर्षीय जेम्स मैककोनाची हैं।

'वाशिंगटन पोस्ट' को छह पुलित्जर पुरस्कार

पत्रकारिता और रचनात्मक लेखन जगत् के सर्वाधिक प्रतिष्ठित 'पुलित्जर पुरस्कार' में द वाशिंगटन पोस्ट के पत्रकारों ने सबसे अधिक पुरस्कार अपने नाम किए। इस अखबार के पत्रकारों को कुल 14 में से 6 पुरस्कार मिले।

सचिन, प्रणव व आशा भोंसले पद्मविभूषण से सम्मानित

राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने राष्ट्रपति भवन के अशोक हाल में विदेश मंत्री **प्रणव मुखर्जी, प्रख्यात पार्श्वगायिका आशा भोंसले, ध्रुपद गायक रहीम, फहीमुद्दीन डागर** और क्रिकेट स्टार **सचिन तेंदुलकर** सहित 55 विशिष्ट व्यक्तियों को '**पद्म पुरस्कार**' प्रदान किए। मुखर्जी, आशा और सचिन को पद्मविभूषण व डागर को पद्मभूषण पुरस्कार दिया गया। पद्मविभूषण पाने वाले दो अन्य व्यक्ति हैं सूचना प्रौद्योगिकी में अग्रणी एन०आर० नारायणमूर्ति और होटल व्यवसायी पी०आर०एस० ओबराय।

इस वर्ष गणतंत्र दिवस पर कुल 135 व्यक्तियों को पद्म पुरस्कार देने की घोषणा की गई थी। सोमवार को 55 व्यक्तियों को यह पुरस्कार दिये गये। अन्य 80 लोगों को मई के अन्त में आयोजित होने वाले समारोह में पुरस्कार दिए जाएँगे। प्रसिद्ध मूर्तिकार अमरनाथ सहगल (मरणोपरान्त) फ्रांसीसी लेखक डोमिनिक लेपियर, बैंक अधिशासी एम०वी० कामथ, शिक्षाविद इं०के० ओम्मन और प्रो० सुखदेव को पद्मभूषण पुरस्कार दिये गये।

जाने माने पत्रकारों राजदीप सरदेसाई, विनोद दुआ और बरखा दत्त को पद्मश्री पुरस्कार दिये गये। पद्मश्री पाने वाले अन्य व्यक्ति हैं—प्रसिद्ध तैराक बुला चौधरी, कलाविद गुरु गंगाधर प्रधान, कलाविद मंगलप्रसाद मोहंती, शिक्षाविद निरुपम वाजपेयी, अमेरिकी चिकित्सा वैज्ञानिक डॉ० श्याम नारायण आर्य और सुरेन्द्र सिंह यादव व साहित्यकार डॉ० एम० लीलावती।

पिताश्री गोपीराम गोइन्का हिन्दी-कन्नड़ अनुवाद पुरस्कार समारोह

कमला गोइन्का फाउण्डेशन द्वारा हिन्दी से कन्नड़ अथवा कन्नड़ से हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ

अनुवादक के सम्मानार्थ घोषित '**पिताश्री गोपीराम गोइन्का हिन्दी-कन्नड़ अनुवाद पुरस्कार**' इस वर्ष **डॉ० तिप्पेस्वामी** को उनकी अनुदित कृति 'अमृत मत्तु विष' (जोकि श्री अमृतलाल नागरजी के हिन्दी उपन्यास 'अमृत और विष' का कन्नड़ अनुवाद है) के लिए दिया गया है।

मुख्य अतिथि श्री श्रीनारायण समीरजी (संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो) के हाथों डॉ० तिप्पेस्वामी को पुरस्कार स्वरूप इक्कीस हजार रुपये नगद के साथ शाल, श्रीफल, स्मृति चिह्न व पुष्पगुच्छ प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि सांसद और साहित्यकार श्री उदयप्रताप सिंहजी द्वारा कर्नाटक के वरिष्ठ हिन्दी साहित्यकार डॉ० वी० वेन्कटेश को उनके हिन्दी साहित्य में योगदान के लिए कमला गोइन्का फाउन्डेशन द्वारा '**गोइन्का हिन्दी साहित्य सारस्वत सम्मान 2008**' से भी नवाजा गया।

वरिष्ठ लेखक विष्णु प्रभाकर सम्मानित

वरिष्ठ लेखक **विष्णु प्रभाकर** (96) को हरियाणा सरकार ने सम्मान राशि के रूप में एक लाख रुपये भेंट किए हैं। हरियाणा साहित्य अकादमी के अध्यक्ष देश निर्मोही ने गुरुवार को पीतमपुरा स्थित उनके घर जाकर यह राशि दी। इस मौके पर शहर के कई जाने-माने रचनाकार भी उपस्थित थे।

डॉ० श्याम सखा 'श्याम' को पं० लखमीचन्द्र पुरस्कार

हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित प्रेस कान्फ्रेंस में हरियाणा के मुख्यमंत्री चौ० भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने वार्षिक पुरस्कारों की घोषणा की। रोहतक शहर के वरिष्ठ चिकित्सक एवं देश के जाने माने साहित्यकार **डॉ० श्याम सखा 'श्याम'** को हरियाणवी लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति का सर्वोच्च पुरस्कार '**पं० लखमीचन्द्र पुरस्कार**' देने की घोषणा हुई है। सम्मान के साथ एक लाख रुपए की राशि निकट भविष्य में चंडीगढ़ में आयोजित समारोह में प्रदान की जाएगी। ज्ञातव्य है कि इसी महीने छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ० रमन सिंह द्वारा डॉ० श्याम को पद्मश्री मुकुटधर पाण्डेय '**छत्तीसगढ़ सृजन सम्मान**' से सम्मानित कर 21,000 रुपए का चेक दिया गया था और 16 मार्च को भोपाल में इनकी पुस्तक 'अकथ' को **पं० अम्बिका प्रसाद दिव्य रजत अलंकरण** से सुशोभित किया गया।

वाराणसी के प्रो० रामहर्ष सहित पाँच वैद्य पुरस्कृत

राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने देश के पाँच वैद्यों को स्वदेशी चिकित्सा पद्धति में उल्लेखनीय योगदान के लिए **रामनारायण वैद्य पुरस्कार** से सम्मानित किया है। उन्होंने कहा कि आधुनिक विश्व को आयुर्वेद की आवश्यकता है और इसे आगे बढ़ाने का सदैव प्रयास होते रहना चाहिए। राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक कार्यक्रम में पाटिल ने वर्ष 2003 से लेकर वर्ष 2007 के लिए इन वैद्यों को सम्मानित किया। अहमदाबाद के एच०एस० कस्तूरे, मुम्बई के वैद्य सुरेश चतुर्वेदी, वाराणसी के प्रो० रामहर्ष सिंह, नोएडा के वैद्य मायाराम उनियाल और बेंगलूर के टी०एल० देवराज को पुरस्कार स्वरूप डेढ़ लाख रुपये, धन्वंतरि की रजत प्रतिमा और प्रशस्ति पत्र दिए गए। यह पुरस्कार आयुर्वेद जगत में लम्बे समय से काम कर रही वैद्यनाथ कम्पनी द्वारा दिया जाता है।

गिरिजा व सरोजा को लाइफ टाइम अचीवमेंट एवार्ड

नई दिल्ली, बनारस घराने की प्रसिद्ध ठुमरी गायिका गिरिजा देवी और भरतनाट्यम की प्रसिद्ध नृत्यांगना एम०के० सरोजा को नृत्य कला के लिए लाइफ टाइम अचीवमेंट एवार्ड से सम्मानित किया गया है। 23 मई को लिजेंड्स ऑफ इंडिया संस्था की अगुवाई में उपराज्यपाल तेजेन्द्र खन्ना ने दोनों कलाकारों को एवार्ड प्रदान किया।

अनुवाद के लिये अकादमी पुरस्कार

हिन्दी के अमर कथाकार मुंशी प्रेमचंद के प्रसिद्ध उपन्यास 'निर्मला' के संस्कृत अनुवाद के लिये इस वर्ष साहित्य अकादमी का अनुवाद पुरस्कार **पंडित श्रीराम दवे** को दिया जायेगा। अकादमी के अध्यक्ष सुनील गंगोपाध्याय के उपन्यास के मराठी अनुवाद के लिये **रंजना श्रीकृष्णा पाठक** को पुरस्कृत किया जायेगा। इसके अलावा महर्षि अरविंदो की प्रसिद्ध काव्य रचना 'सावित्री' के तमिल अनुवाद के लिये **स्व० ए०आई० रवि आसमुगम,** प्रसिद्ध अंग्रेजी लेखक रस्किन बांड के उपन्यास 'ए फ्लाइट ऑफ पीजन्स' के मणिपुरी में अनुवाद के लिये **एस० भानुमति देवी,** 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' के लिये इंदिरा गोस्वामी के उपन्यास 'आधा लेखा दस्तावेज' के बोडो भाषा में अनुवाद के लिये **अंजलि देमारि** को पुरस्कृत किया जायेगा। अकादमी ने इस बार 21 भाषाओं में अनुवाद पुरस्कार दिये जाने की घोषणा की है। तीन भाषाओं—डोगरी, नेपाली और संथाली में कोई पुरस्कार नहीं दिया गया। ये पुरस्कार 21 अगस्त को कोलकाता में अकादमी के अध्यक्ष प्रदान करेंगे। हिन्दी के प्रख्यात लेखक यशपाल, ओडिया लेखक गोपीनाथ मोहंति, बंगला लेखक बुद्धदेव बसु, ओडिया लेखक मनरेजमे दास, कमलादास आदि की कृतियों के अनुवाद के लिये भी पुरस्कार दिये जायेंगे। पुरस्कार में 20 हजार रुपये की धनराशि तथा ताम्रपत्र प्रदान किया जाता है।

बारहवें अखिल भारतीय अम्बिकाप्रसाद दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा पुरस्कारों हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित

स्व० अम्बिकाप्रसाद 'दिव्य' की स्मृति में साहित्य सदन, भोपाल द्वारा प्रदान किये जाने वाले अनेक साहित्यिक पुरस्कारों हेतु पुस्तकें आमंत्रित हैं—उपन्यास विधा हेतु (पाँच हजार रुपये), कहानी विधा हेतु (दो हजार एक सौ रुपये), काव्य विधा हेतु (दो हजार एक सौ रुपये), नाटक, व्यंग्य, ललित-निबन्ध, पत्रकारिता, बाल साहित्य, दिव्य साहित्य पर शोध एवं साहित्यिक पत्रिकाओं हेतु (दिव्य रजत अलंकरण)।

सम्पर्क : जगदीश किंजल्क, संयोजक 'दिव्य पुरकार', 49 द्वारकापुरी, कोटरा रोड, पी०एण्ड टी० चौराहे के पास, भोपाल-462003

प्रविष्टि आमंत्रित

समग्र दृष्टि, पुणे द्वारा प्रायोजित 'कविवर श्री हरिनारायण व्यास अखिल भारतीय हिन्दी काव्य पुरस्कार-2008' हेतु। पुरस्कार राशि : 11000/- रुपये।

प्रविष्टियाँ प्राप्त होने की अन्तिम तिथि—30 जून 2008।

सम्पर्क : मास्टर मीडिया पब्लिकेशन्स, 521, स्टर्लिंग सेण्टर, होटल अरोरा टॉवर्स के सामने, एम०जी० रोड, पुणे-411 001

10वें आचार्य निरंजननाथ सम्मान हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित

आचार्य निरंजननाथ स्मृति सेवा संस्थान के सहयोग से साहित्यिक पत्रिका 'सम्बोधन' द्वारा प्रतिवर्ष दिया जाने वाला 'आचार्य निरंजननाथ सम्मान' इस वर्ष उपन्यास विधा की पुस्तक पर दिया जायेगा। पुरस्कृत रचनाकार को पन्द्रह हजार रुपये नकद, शॉल, स्मृतिचिह्न एवं प्रशस्ति पत्र भेंट किया जायेगा। इस 10वें अखिल भारतीय पुरस्कार हेतु गत पाँच वर्षों (2003 से 2007) में प्रकाशित उपन्यास की तीन प्रतियाँ 31 अगस्त, 2008 तक प्रकाशक, लेखक और कोई भी शुभचिन्तक 'सम्बोधन' के पते पर भेज सकते हैं।

निर्णय अक्टूबर, 2008 तक कर दिया जायेगा। निर्णायक मण्डल का निर्णय अन्तिम एवं मान्य होगा।

सम्पर्क : कमर मेवाड़ी, संयोजक-आचार्य सम्मान-2008, 'सम्बोधन', पो० चाँदपोल, कांकरोली-313324,जिला-राजसमंद (राजस्थान)

"यदि हम विभिन्न भाषा-भाषी—एक बंगाली, दूसरा मराठी, तीसरा तेलुगू, चौथा गुजराती और मैं पंजाबी—क्या सात समंदर पार की अंग्रेजी भाषा में परस्पर बातें करेंगें? कदापि नहीं—हम हिन्दी में बात करेंगे।"

— सरदार भगत सिंह

स्मृति-शेष

नहीं रहे पद्मविभूषण पं० किशन महाराज

काशी की संगीत परम्परा की अनन्य विभूति तबला-सम्राट **पं० किशन महाराज** (85 वर्ष) का देहावसान 5 अप्रैल की रात को हो गया। वे अपने पितृव्य पं० कंठे महाराज के शिष्य थे। काशी की संगीत-परम्परा में किशन महाराज स्वयं एक घराने का प्रतिनिधित्व करते थे। संगत-वाद्य 'तबले' को एक विशिष्ट स्थान देना ही, लय-ताल के मर्मज्ञ इस संगीत-साधक का प्रमुख कार्य-क्षेत्र रहा है। आपको देश-विदेश की विभिन्न संस्थाओं ने सम्मानित और पुरस्कृत किया था। भारत सरकार ने आपको पद्मश्री (1973 ई०) और पद्मविभूषण (2002 ई०) जैसे राष्ट्रीय-सम्मान से विभूषित किया था।

'मैनेजमेंट गुरु' ने भी अलविदा कहा

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रबन्धन की पढ़ाई को नया आयाम देने वाले 80 वर्षीय **प्रो० मुकुंदलाल** ने अंततः इस दुनिया को अलविदा कह दिया। विद्यार्थी से लेकर शिक्षण तक के अपने जीवन को अपने ही अन्दाज में जीने और बनारसी तहजीब संजोते हुए प्रो० लाल उम्र भर शिक्षा ग्रहण करते व बाँटते रहे। वह स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज (एसएमएस) के संस्थापक निदेशक व महानिदेशक भी रहे। इनके नेतृत्व में एसएमएस ने बुलन्दियाँ हासिल कीं। हिन्दी के प्रति उनकी अगाध निष्ठा का भाव इस बात से ही झलकता है कि आपने सांख्यिकी की किताब हिन्दी में लिखी और पुरस्कार भी पाया।

वह प्रबंधशास्त्र संकाय (बीएचयू) के डीन रहे तथा वर्ष 1995 में सेवानिवृत्त हुए। उन्हें प्रबन्धन के क्षेत्र में एक अद्‌भुत गुरु के रूप में देखा जाता है।

लेखक सुशील कुमार का निधन

हिन्दी के लेखक एवं पत्रकार **सुशील कुमार** का 9 मई को दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। वे 73 साल के थे।

1935 में इलाहाबाद में जन्मे कुमार हिन्दी रीडर्स डाइजेस्ट सर्वोत्तम मैगजीन के एडीटर थे। उन्होंने महाभारत के स्त्री पात्रों, कुंती, पांचाली, गांधारी, देवकी, सत्यवती, रुक्मिणी पर छह खण्डों में उपन्यास लिखा था। इसके अलावा उन्होंने कर्ण पर भी दो खण्डों में उपन्यास लिखा था। कुमार इन दिनों कौटिल्य पर एक उपन्यास लिख रहे थे।

डॉ० गिरिजाशंकर त्रिवेदी नहीं रहे

देहरादून के प्रसिद्ध साहित्यकार व संस्कृत के मर्मज्ञ विद्वान 68 वर्षीय **डॉ० गिरिजाशंकर त्रिवेदी** का 15 अप्रैल 2008 की रात में निधन हो गया। गले के कैंसर से ग्रस्त होने के कारण पिछले एक वर्ष से वे ठीक से बोल नहीं पाते थे। इसके बावजूद वे अन्तिम साँस तक पूर्ण सक्रिय रहे। उनकी चर्चित पुस्तकों में इन्द्रालय (1970), ज्योतिरथ (1971), हमारी सांस्कृतिक विरासत (1971), वाल्मीकि के वन और वृक्ष (1988), महाभारत के वन और वृक्ष (1989) उल्लेखनीय हैं। उनके द्वारा सम्पादित पुस्तक 'साहित्यिक अंत्याक्षरी', 'मानस अंत्याक्षरी' देशभर की शिक्षा संस्थाओं में काफी लोकप्रिय हुई है। अस्वस्थता के कारण जब उनकी वाणी अवरुद्ध हो गई, तब उन्होंने अपनी लेखनी को पूर्णतः सक्रिय कर 'तुलसी के मंगल दल', 'उनको याद करें', 'इन्द्रधनुष कसे बिजली की डोर' जैसी रचनाएँ दी हैं।

कवयित्री डॉ० इन्दु जैन नहीं रहीं

हिन्दी की प्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका 72 वर्षीय **डॉ० इन्दु जैन** का 27 अप्रैल को निधन हो गया। उन्होंने कविता पर दस से अधिक व गद्य एवं अन्य विषयों पर छः से अधिक पुस्तकें लिखीं तथा 'इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका' के 'भारत ज्ञानकोश' के छह भागों का सम्पादन भी किया। साहित्य सेवा के लिए उन्हें हिन्दी अकादमी के 'साहित्य कृति पुरस्कार', 'राजा राममोहन राय कलाश्री सम्मान', 'मैथिलीशरण गुप्त सम्मान' आदि से विभूषित किया गया।

'द लैंड' की लेखिका का निधन

दक्षिण कोरिया की प्रख्यात साहित्यकार **पोर्क क्युंग नी** का लम्बी बीमारी के बाद यहाँ निधन हो गया। 81 वर्षीय महान लेखिका लम्बे अर्से से गले के कैंसर से पीड़ित थीं। उन्हें 19वीं और 20वीं शताब्दी में कोरिया में हुए दमन के विरोध में लिखे महाकाव्य 'द लैंड' के लिए जाना जाता है। समूचे कोरिया में तोजी के नाम से मशहूर इस लेखिका ने 1955 में अपने लेखन की शुरुआत की थी। 'द लैंड' की रचना करने में उन्हें पच्चीस वर्ष लगे। इस महाकाव्य पर कई टीवी सीरियल व फिल्में बनी और कई नाटकों का मंचन हुआ। इस काव्य में सैकड़ों चरित्र हैं। दक्षिण कोरिया के सांस्कृतिक मंत्री ने बताया कि साहित्य के क्षेत्र में तोजी के अप्रतिम योगदान के लिए उन्हें देश का सर्वोच्च सम्मान दिया जाएगा।

गाँधीवादी रचनाकार निर्मला देशपांडे का निधन

सुप्रसिद्ध गाँधीवादी रचनाकार, विचारक, सामाजिक कार्यकर्ती, सांसद **निर्मला देशपांडे** ने मई महीने की पहली तारीख को इस नश्वर संसार का परित्याग कर दिया। उनके पिता पुरुषोत्तम यशवंत देशपांडे प्रसिद्ध चिंतक व साहित्यकार थे। निर्मलाजी अपनी युवावस्था में ही विनोबाभावे के पवनार आश्रम से जुड़ गयीं और उन्होंने अपना जीवन भूदान आन्दोलन को समर्पित कर दिया। विभिन्न धर्मों के बीच आपसी भाईचारे की हिमायती रहीं निर्मलाजी ने महिलाओं, आदिवासियों और पिछड़े वर्ग के लोगों की स्थिति सुधारने के लिये भी कार्य किया। उन्होंने हिन्दी में उपन्यास, नाटक, यात्रा-वृत्तान्त के अलावा विनोबा भावे की जीवनी भी लिखी। उन्हें वर्ष 1997 और 2004 में राज्यसभा का सांसद चुना गया। सन् 2005 में उन्हें नोबल शांति पुरस्कार के लिये भी नामित किया गया था। पद्मविभूषण से सम्मानित निर्मलाजी को सन् 2007 में राष्ट्रपति पुतिन द्वारा 'आर्डर ऑफ फ्रेंडशिप' सम्मान प्रदान किया गया था। उनके निधन से गाँधी-चिन्तन के एक युग का समापन हो गया।

डॉ० राधेश्याम द्विवेदी

सुप्रसिद्ध विधिवेत्ता, साहित्यकार और वयोवृद्ध पत्रकार **डॉ० राधेश्याम द्विवेदी** का निधन हिन्दी लेखन के क्षेत्र में एक अपूरणीय क्षति है (जन्म : 26.02.1921 व निधन : 24.02.2008), उन्होंने साहित्य, इतिहास और कानून से सम्बन्धित कृतियों का सृजन और सम्पादन किया था। डॉ० राधेश्याम द्विवेदी जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर से हिन्दी में डी.लिट्. की उपाधि प्राप्त करने वाले प्रथम व्यक्ति थे। वे एक स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, समाजसेवी और व्यवहारकुशल इंसान थे।

डॉ० ब्रजभूषण सिंह 'आदर्श' का निधन

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क विभाग के सेवानिवृत्त उप संचालक, साहित्यिक पत्रकार तथा स्थापित लेखक **डॉ० ब्रजभूषणसिंह 'आदर्श'** का निधन 3 अप्रैल को मस्तिष्क की नसें निष्क्रिय हो जाने के कारण हो गया। श्री आदर्श ने चालीस से अधिक ग्रन्थों का प्रणयन किया, श्री आदर्श 'प्रतिभा फीचर्स' नामक एक न्यूज एजेंसी का संचालन भी करते रहे थे, उन्हें अनेक प्रान्तस्तरीय तथा राष्ट्रीय सम्मान व पुरस्कार भी प्राप्त हुए।

विजय तेन्दुलकर जीवन मंच से विदा

80 वर्षीय नाट्यकार **विजय तेन्दुलकर** ने अपनी रचनात्मक-प्रतिभा द्वारा केवल मराठी ही नहीं बल्कि आधुनिक भारतीय नाट्य-साहित्य और रंगमंच पर अपनी सार्थक उपस्थिति दर्ज़ करायी और चुपचाप इस नश्वर जीवन के मंच से विदा ले ली। घासीराम कोतवाल, सखाराम बाइंडर, गिद्ध, कमला, बेबी जैसे नाटकों का कई भाषाओं में अनुवाद और मंचन हुआ। उनकी रचनाएँ यथार्थ की परतें खोलती हैं और परत-दर-परत उस विकृत सच्चाई तक पहुँचती हैं जहाँ पाठक या प्रेक्षक अवाक् रह जाता है और मनोरंजन के बजाय चिंतन के लिये विवश हो जाता है। विजय तेन्दुलकर ने नश्वर देह का त्याग किया किन्तु संजीवित है उनका अविनश्वर रचना-संसार।

प्रख्यात कवि विद्रोही नहीं रहे

80 वर्षीय प्रख्यात कवि **श्री दामोदर स्वरूप 'विद्रोही'** का 11 मई को शाहजहाँपुर में निधन हो गया। उन्हें साहित्य सेवा के लिए अनेकानेक सम्मानों से विभूषित किया गया था।

संगोष्ठी/लोकार्पण

महादेवी वर्मा स्मृति व्याख्यान

नारी चेतना की प्रतिनिधि रचनाकार महादेवी वर्मा की जन्मशती के समापन पर नैनीताल से 25 किमी० दूर रामगढ़ में स्थित महादेवी वर्मा सृजन पीठ में विगत दिनों सुप्रसिद्ध कवि-विचारक प्रो० केदारनाथ सिंह का व्याख्यान आयोजित किया गया। यह इस श्रृंखला का चौथा व्याख्यान था। इससे पहले इस व्याख्यानमाला के अन्तर्गत प्रो० नामवर सिंह, प्रो० मैनेजर पाण्डेय तथा प्रो० जगन्नाथ जोशी के व्याख्यान हो चुके थे।

मुख्य वक्ता वरिष्ठ कवि प्रो० केदारनाथ सिंह ने कहा कि महादेवी की अनुभूतियाँ वास्तविक अनुभव पर आधारित थीं। महादेवी का रहस्यवादी साहित्य भ्रष्ट राजसत्ता से मोहभंग का उदाहरण प्रस्तुत करता है। उनकी कविता 'पंथ होने दो अपरिचित प्राण रहने दो अकेला' छायावादी युग का घोषणा पत्र है। महादेवी का मुक्त छंद निराला के मुक्त छंद की तरह मानव मुक्ति का विस्फोट था।

केदारजी ने अपने लगभग एक घंटे के गहन और बेहद सधे हुए व्याख्यान में महादेवी को जीवन की वास्तविकताओं और संघर्ष का कवि मानते हुए उनकी कविताओं के पुनर्पाठ की आवश्यकता पर बल दिया।

इस संगोष्ठी में डॉ० विजय मोहन सिंह, मंगलेश डबराल, पंकज बिष्ट, प्रो० सी०पी० बर्धवाल, प्रो० बटरोही, सुधा अरोड़ा और मोहन सिंह रावत ने अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर दिवाकर भट्ट द्वारा सम्पादित साहित्यिक पत्रिका 'आधारशिला' के महादेवी वर्मा विशेषांक का विमोचन किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रो० दिवा भट्ट ने किया।

काशी विद्यापीठ में काव्यपाठ

गत दिनों 'आ०इ०सा०' के तत्वावधान में महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के थिएटर कक्ष में 'आजादी, किसान और कविता' विषय पर काव्य गोष्ठी का आयोजन हुआ।

कार्यक्रम में सबसे पहले युवा कवि **श्रीप्रकाश शुक्ल** ने काव्यपाठ किया। इन्होंने 'मनिहार', 'हड़परौली', 'किसान', 'भूख', 'आजादी कथा' जैसी कविताओं का पाठ किया। 'भूख' कविता को श्रोताओं द्वारा काफी पसन्द किया गया जिसमें देश की बदहाली और किसानों की भुखमरी का विचारोत्तेजक खाका खींचा गया— ''पहले वह मरा/उसके बाद उसका पूरा परिवार/ यहाँ पहले रामराज्य आया/फिर साम्राज्य/फिर कुछ निवेश/और अब पूरा उपनिवेश''।

भोजपुरी कवि **प्रकाश उदय** ने अपने काव्य पाठ में किसान जीवन के गहरे संवेदनशील चित्र प्रस्तुत किये। उनकी 'फूलगोभी' कविता काफी प्रशंसित रही।

समय-संवाद

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

विगत 20-21 मई 2008 को गुरुचरण आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की जन्मशती पर उनकी कर्मभूमि काशी में साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के तत्वावधान में दो दिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया। महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के गाँधी अध्ययन पीठ सभागार में आयोजित कार्यक्रम के उद्घाटन-सत्र के मुख्य अतिथि **डॉ० नामवर सिंह** ने कहा कि पण्डित हजारीप्रसाद द्विवेदी शास्त्रीय ठूँठ आलोचक नहीं हैं। वे संस्कृत की शास्त्रीय परम्परा के हिन्दी आलोचक हैं जिनकी आलोचना की भाषा जीवन्त मातृभाषा हिन्दी है और यह परम्परा रामावतार शर्मा, महापण्डित राहुल सांकृत्यायन और पं० चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' की है। जिनके पाण्डित्य में शास्त्रीयता और सर्जनात्मकता में हिन्दी है। उन्होंने द्विवेदीजी के व्यक्तित्व को रेखांकित करते हुए कहा कि द्विवेदीजी के भीतर दो व्यक्ति हैं। जिनमें एक रचता है और दूसरा उसे देखता है, परखता है। नामवरजी ने द्विवेदीजी की प्रतिभा का निरूपण करते हुए कहा कि उनके भीतर दो प्रकार की प्रतिभाएँ हैं जिनमें एक कारयित्री और दूसरी भावयत्री। नामवरजी ने प्रतिभा के दोनों रूपों को कंचन और कसौटी की संज्ञा देते हुए द्विवेदीजी के सर्जनात्मक रचना क्रम को कंचन जबकि आलोचनात्मक कर्म को कसौटी की संज्ञा से अभिहित किया। आचार्य द्विवेदी के साहित्य का भोलापन लुभावना है। उन्होंने अपने चिंतन और लेखन में लोक और वेद दोनों ही परम्परा को साधा था। वे स्वयं कंचन भी हैं और कसौटी भी। उनकी आलोचना में भी सर्जनात्मक प्रतिभा दिखती है।

अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में **अशोक वाजपेयी** ने कहा कि द्विवेदीजी के यहाँ परम्परा और आधुनिकता के द्वैत का अतिक्रमण होता है। उन्होंने द्विवेदीजी की परम्परा को निरूपित करते हुए कहा कि द्विवेदीजी के भीतर भारतीय परम्परा के केन्द्रीय भाव अभयता की भावना विद्यमान है। द्विवेदीजी के यहाँ सत्य की पुनरावृत्ति नहीं बल्कि नये सत्य को प्राप्त करने की आकांक्षा है। द्विवेदीजी का बुनियादी बोध उनके विनोद भाव की उपज है। आचार्यजी से पहले हिन्दी में कोई सार्वजनिक बुद्धिजीवी नहीं हुआ। उनका व्याख्यान सुनने के लिये लोग लालायित रहते थे। उन्होंने साहित्य में गल्प के प्रति आकर्षण पैदा किया।

डॉ० विश्वनाथप्रसाद तिवारी ने अपने सम्बोधन में कहा कि द्विवेदीजी ऐसे व्यक्ति हैं जो चित्त को ध्यान में रखकर रचना करते हैं और यह चित्त आत्यंतिक चित्त है। द्विवेदीजी के जीवन की बाती दोनों सिरों पर जलती है जिसका एक सिरा परम्परा का है तो दूसरा आधुनिकता का।

द्विवेदीजी के आत्मज **मुकुन्द द्विवेदी** ने पण्डितजी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर व्यापक प्रकाश डालते हुए कहा कि उनके भीतर पाण्डित्य एवं विनोदमयता का अद्भुत समन्वय था।

स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी के सचिव **अग्रहार कृष्णमूर्ति** ने तथा पाँच सत्रों में चली इस ऐतिहासिक संगोष्ठी का संचालन उपसचिव **ब्रजेन्द्र त्रिपाठी** ने किया।

प्रथम सत्र—विषय : **उपन्यास की भारतीय अवधारणा और हजारीप्रसाद द्विवेदी के उपन्यास** *प्रमुख वक्ता*—डॉ० काशीनाथ सिंह (सत्र अध्यक्ष), डॉ० शम्भुनाथ व रवीन्द्र त्रिपाठी।

द्वितीय सत्र—विषय : **हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबन्ध** *प्रमुख वक्ता*—गंगाप्रसाद विमल (सत्र अध्यक्ष), प्रो० अवधेश प्रधान, अरविन्द त्रिपाठी व यतीन्द्र मिश्र।

तृतीय सत्र—विषय : **हजारीप्रसाद द्विवेदी की इतिहास दृष्टि** *प्रमुख वक्ता*—रमेशकुन्तल मेघ (सत्र अध्यक्ष), भगवान सिंह व योगेन्द्र शर्मा 'अरुण'।

चौथा सत्र—विषय : **हजारीप्रसाद द्विवेदी की दृष्टि में भारतीय चिन्ताधारा और मध्यकालीन बोध** *प्रमुख वक्ता*—वागीश शुक्ल (सत्र अध्यक्ष), रामदेव शुक्ल, टी०एन० शुक्ल व राजेन्द्र पाण्डेय।

पाँचवाँ सत्र—विषय : **लालित्य चिन्तन : हजारीप्रसाद द्विवेदी की सृजनात्मक आलोचना** *प्रमुख वक्ता*—कमलेशदत्त त्रिपाठी (सत्र अध्यक्ष), रामवचन राय, ए० अरविन्दाक्षन व युवा कवि श्रीप्रकाश शुक्ल।

समापन सत्र—प्रमुख वक्ता **डॉ० नन्दकिशोर आचार्य** (सत्र अध्यक्ष), **प्रो० इन्द्रनाथ चौधरी** (मुख्य अतिथि), **गिरीश पंकज** व **ज्योतिष जोशी**। प्रो० इन्द्रनाथ चौधरी ने द्विवेदीजी को लोकग्राही गम्भीर लेकिन विनोदपूर्ण चिन्तक बताया। आचार्य द्विवेदी हिन्दी-चेतना के वास्तविक स्वरूप को उद्घाटित करते हैं। संस्कृत शक्ति की भाषा है तो हिन्दी में सबको समेट कर चलने की क्षमता है। आचार्य द्विवेदी की रचनाओं में परम्परा और आधुनिकता के बीच कोई द्वन्द्व नहीं है। **डॉ० नंदकिशोर आचार्य** ने कहा कि आचार्यजी की इतिहास दृष्टि अरविंद की जीवन-दृष्टि से मेल खाती है। यह मनुष्य की चेतना का विकास है, इसमें से ही परम्परा विकसित होती है।

इस अवसर पर नगर के साहित्यप्रेमी, विद्वान एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएँ उपस्थित थे।

साहित्य अकादेमी से पुरस्कृत कवि **ज्ञानेन्द्रपति** ने खेती में साम्राज्यवादी घुसपैठ का चित्रण करते हुए अपनी कविता 'बीज व्यथा' पढ़ी जिसकी इन पंक्तियों पर श्रोता काफी प्रभावित दिखे—''जहाँ से निकलकर आते हैं/पुष्ट पुष्ट संकर बीज/भारत के खेतों पर छा जाने/दुबले एकल/भारतीय बीजों को बहिया कर/आते हैं वे आक्रांता बीज/टिड्डी दलों की तरह''। इस अवसर पर विकास और उसके नाम पर हो रहे विस्थापन पर उन्होंने एक कविता—''एक आदिवासी गाँव से गुजरती हुई सड़क'' भी पढ़ी।

इन कवियों ने आज के दौर में किसान और उनके जीवन संघर्ष को अपनी कविता में उजागर किया। इन्होंने कविताओं के माध्यम से देश में बढ़ते हुए साम्राज्यवादी हस्तक्षेप और विकास की हकीकत को उजागर किया।

भैय्याजी की स्मृति में साहित्य सम्मान की पहल

वाराणसी। भैय्याजी बनारसी काशी की साहित्यिक परम्परा के उज्ज्वल नक्षत्र थे। उनकी स्मृति में साहित्यकारों के सम्मान की योजना तैयार करना मेरी प्राथमिकता है। यह विचार भैय्याजी बनारसी की 94वीं जयंती के अवसर पर आयोजित स्मृति संगोष्ठी में विधायक अजय राय ने व्यक्त किये।

भैय्याजी बनारसी स्मृति न्यास की ओर से कबीरचौरा स्थित सेतु सांस्कृतिक केन्द्र के सभाकक्ष में विशिष्ट अतिथि पूर्व सांसद शंकरप्रसाद जायसवाल ने भैय्याजी बनारसी को श्रद्धांजलि अर्पित की। पं० धर्मशील चतुर्वेदी ने कहा कि भैय्याजी ने जिस तत्परता से साहित्यकारों की कई पीढ़ियों का विकास किया, उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता है। अध्यक्षता करते हुए पं० श्रीकृष्ण तिवारी ने कहा कि भैय्याजी अत्यन्त सजग और जागरूक रचनाकार थे, जिन्होंने रचनाओं के द्वारा समाज की विसंगतियों पर तीखा प्रहार किया। मौके पर न्यास की ओर से जवाहर लाल शास्त्री, जयशंकर शर्मा, मार्कण्डेय त्रिवेदी, मृत्युंजय कुमार नारायण तथा विनय कुल को सम्मानित किया गया।

संवत्सर व्याख्यानमाला का 'पंचम आयोजन'

भरतपुर। ''देश की वर्तमान पीढ़ी के हृदय में अपनी भारतीय संस्कृति के प्रति प्रेम का अभाव देश के विकास की दृष्टि से अत्यन्त घातक है क्योंकि देश प्रेम ही वह तत्त्व है जो हमें व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर राष्ट्रीय सन्दर्भों में सोचने और काम करने की शक्ति देता है'' ये विचार अखिल भारतीय साहित्य परिषद् भरतपुर द्वारा आयोजित संवत्सर व्याख्यानमाला के पाँचवें आयोजन के अवसर पर सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के पूर्व कुलपति और संस्कृत के उद्भट विद्वान **प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र** ने व्यक्त किये। प्रो० मिश्र ने बृहत्तर भारत और भारतीय संस्कृति विषय पर व्याख्यान देते हुए कहा कि आज हम विश्व पटल पर जिस भू खण्ड को भारत के नाते जानते हैं वह उस विराट भारत का एक अंश है जिसे सम्पूर्ण विश्व ईसा की पहली शताब्दी से लेकर लगभग पन्द्रहवीं शताब्दी तक ग्रेटर भारत या बृहत्तर भारत के नाम से जानता था। यह बृहत्तर भारत हमारे पूर्वजों ने विस्तृत समुद्र को लांघकर जो जय यात्राएँ की उनके परिणामस्वरूप अस्तित्व में आया था।

तृतीय निर्मल स्मृति व्याख्यान

विगत दिनों दिल्ली के त्रिवेणी कला संगम में निर्मल वर्मा के 79वें जन्मदिन के अवसर पर तृतीय निर्मल स्मृति व्याख्यान आयोजित किया गया। व्याख्यान का विषय था 'कला और सत्य'। वक्ता थे श्री यशदेव शल्य। मुख्य वाचन सुपरिचित रंगकर्मी श्री रामगोपाल बजाज ने किया।

'हम भारतीय' शिविर

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की ओर से सेवाग्राम बापूकुटी के यात्री-निवास में विगत दिनों आयोजित 'हम भारतीय शिविर' का उद्घाटन गांधीवादी नारायणभाई जाजू ने किया तथा अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ, नई दिल्ली के अध्यक्ष मधुकर राव चौधरी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

अपने उद्घाटन भाषण में नारायणभाई जाजू ने कहा कि हमने, 'हम भारतीय अभियान' के लिए महात्मा गांधी की कर्मभूमि को इसलिए चुना क्योंकि यहाँ आकर हम सबको एक प्रेरणादायी ऊर्जा मिलती है।

द्विदिवसीय शिविर के समापन के अवसर पर जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री गुलाम नबी आजाद ने हिन्दी प्रेमियों को संबोधित करते हुए कहा कि मैं सेवाग्राम के शिविर में मुख्यमंत्री के रूप में नहीं बल्कि गाँधीवादी के रूप में आया हूँ। उन्होंने कहा कि हिन्दी को विश्वभाषा की मंजूरी मिलनी चाहिए। संयुक्त राष्ट्र में भारत के प्रतिनिधि को उधार की ली हुई अंग्रेजी भाषा में विचार प्रकट करना पड़ता है। विश्व में भारत आर्थिक सहित सभी क्षेत्रों में प्रगति कर रहा है। मगर हमारी हिन्दी राष्ट्रभाषा को विश्वस्तर पर मान्यता नहीं मिलना, अच्छी बात नहीं है। भारत के हर नागरिक को देश की आजादी दिलाने की तरह ही हिन्दी को विश्वभाषा का सम्मान दिलाने के लिए प्रयास करना चाहिए।

हिन्दी पत्रिका 'कोंगु निधि' का विमोचन

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय, कोयंबत्तूर की हिन्दी गृह पत्रिका 'कोंगु निधि' के मार्च, 2008 अंक का विमोचन कोयंबत्तूर में दि० 9-4-2008 को श्री के०श्रीनिवास, क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त, कोयंबत्तूर तथा चेन्नई क्षेत्र एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोयंबत्तूर के करकमलों से किया गया। विमोचन के पश्चात् अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि कार्यालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों की सर्जनात्मक प्रतिभा को निखारने हेतु एक मंच के रूप में ऐसी गृह पत्रिकाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। पत्रिका के सम्पादक डॉ० सी० जय शंकर बाबु, सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं सदस्य सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोयंबत्तूर ने कहा कि तमिलनाडु से ऐसी स्तरीय पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में एक विशिष्ट उपलब्धि है। उन्होंने बताया कि पत्रिका में प्रकाशित लगभग सभी रचनाएँ तमिल एवं मलयालम भाषियों द्वारा लिखी गई हैं जिनमें अधिकांश पदाधिकारियों ने कार्यालय में ही हिन्दी सीखी है। सीखी हुई भाषा में स्तरीय रचनाएँ प्रस्तुत करना हिन्दी के प्रति उनकी आत्मीयता का प्रतीक है।

'नहीं होना श्रापमुक्त' का लोकार्पण

विगत दिनों नई दिल्ली के हिन्दी भवन सभागार में साहित्यिक संस्था 'उद्भव' द्वारा आयोजित समारोह में सुप्रसिद्ध कथाकार श्रीमती चित्रा मुद्गल ने कवि श्री अभय जैन के कविता संग्रह 'नहीं होना श्रापमुक्त' का लोकार्पण किया।

'वह रात' का लोकार्पण

विगत दिनों साहित्य अकादमी के सभागार में 'प्रवासी संसार' पत्रिका के तत्त्वावधान में आयोजित प्रवासी हिन्दी लेखिका श्रीमती उषा राजे सक्सेना के कहानी संग्रह 'वह रात' का लोकार्पण मुख्य अतिथि, दिल्ली सरकार के वित्त मंत्री डॉ० अशोक वालिया ने किया। अध्यक्षता पूर्व सांसद डॉ० रत्नाकर पाण्डेय ने की।

संकल्प रथ का अप्रैल अंक दिनकर जी पर

मध्य प्रदेश की राजधानी से विगत बारह वर्ष से निरन्तर प्रकाशित छन्दधर्मी मासिकी संकल्प रथ का अप्रैल अंक राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर पर प्रकाशित किया गया है। इसमें डॉ० सुरेश गौतम, डॉ० श्यामसुन्दर घोष, डॉ० सूर्यप्रसाद शुक्ल, डॉ० सरोजिनी कुलश्रेष्ठ, डॉ० महाश्वेता चतुर्वेदी, डॉ० विजयबहादुर सिंह, डॉ० नरेन्द्र झा, डॉ० शंकरमोहन झा, श्री दिवाकर वर्मा के लेखों के अतिरिक्त स्व० दिनकर जी के अनेक गीत एवं लोकप्रिय कविताएँ दी गई हैं।

आचार्य देवेन्द्रनाथ की पुस्तक का विमोचन

वाराणसी। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, धर्म दर्शन विभाग के आचार्य देवेन्द्रनाथ तिवारी की 'भर्तृहरि के दर्शन की केन्द्रीय समस्याएँ' पुस्तक का विमोचन मानव संसाधन विकास मंत्री अर्जुन सिंह ने 10 मई को भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली में आयोजित समारोह में किया। अर्जुन सिंह ने उन्हें मानद उपाधि तथा अंगवस्त्रम

भेंट किया। समारोह में प्रो० रामकृष्ण राव, परिषद की अध्यक्ष गोदावरी मिश्र, प्रो० नामवर सिंह, सदस्य सचिव प्रो० पी०के० चट्टोपाध्याय व प्रो० कपिला वात्स्यायन आदि उपस्थित थे।

'गंगा-जमुना बीच' का विमोचन

वाराणसी। पूर्वांचल के ग्रामीण जीवन पर लिखे हिन्दी उपन्यास 'गंगा-जुमना बीच' का काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित राधाकृष्णन सभागार में आयोजित समारोह में कुलपति प्रो० पंजाब सिंह ने विमोचन किया। उपन्यास की लेखिका डॉ० विभा सिंह चौहान दिल्ली विश्वविद्यालय से सम्बद्ध जाकिर हुसैन महाविद्यालय में अंग्रेजी की प्राध्यापक हैं।

'भारत चरित्र' का लोकार्पण

पं० रामप्रसाद बिस्मिल फाउंडेशन के तत्त्वावधान में कवि भगवान सिंह 'हंस' के महाकाव्य 'भारत चरित्र' का लोकार्पण हिन्दी कवि पं० सुरेश नीरव ने किया।

'तलाश रिश्तों की' का लोकार्पण

करुणा श्रीवास्तव की सद्य प्रकाशित कृति 'तलाश रिश्तों की' के लोकार्पण समारोह में मुख्य अतिथि राजस्थान ज्ञान आयोग के अध्यक्ष, पूर्व मुख्य सचिव राजस्थान ने कहा कि बाजारवाद और उपभोक्तावाद के कारण आज खून के रिश्तों में दरार पड़ने लगी है, आज रिश्ते भौतिक परिलब्धियों की बहुलता, सत्ता के गलियारे में व्यक्ति के साधन, मीडिया में व्यक्ति के व्यक्तित्व के महिमामण्डन पर निर्भर कर रहे हैं, इसीलिए हर किसी को पारम्परिक रिश्तों में आए शैथिल्य के कारण अपनी सुरक्षा के लिए नए-नए रिश्तों की तलाश है।

सप्रे संग्रहालय रजत जयंती ग्रन्थ का लोकार्पण

माधवराव सप्रे समाचारपत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल की रजत जयंती के उपलक्ष्य में प्रकाशित स्मारक ग्रन्थ का विमोचन माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के कुलपति श्री अच्युतानंद मिश्र ने किया। महापौर श्री सुनील सूद ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। समारोह में बुजुर्ग पत्रकार श्री श्यामसुन्दर ब्यौहार को 'लाल बलदेव सिंह' सम्मान प्रदान किया गया। दैनिक भास्कर के सम्पादक श्री अभिलाष खांडेकर को 'माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार' श्री पंकज पाठक (नवभारत) एवं श्री प्रकाश भटनागर (दैनिक जागरण) को 'जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी पुरस्कार', उत्कृष्ट पत्रिका वर्ग में 'इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिए' के सम्पादक श्री संतोष चौबे और फीचर के लिए सुश्री वनिता श्रीवास्तव (हिन्दुस्तान टाइम्स) को 'रामेश्वर गुरु पुरस्कार', श्री प्रकाश हिन्दुस्तानी (सहारा समय) एवं श्री अनुराग उपाध्याय (इंडिया टीवी) को 'झाबरमल्ल शर्मा पुरस्कार' तथा सुश्री श्रावणी सरकार (हिन्दुस्तान टाइम्स) को के०पी० नारायण पुरस्कार प्रदान किया गया।

संस्थापक श्री विजयदत्त श्रीधर ने बताया कि विगत पच्चीस वर्षों में सप्रे संग्रहालय में पच्चीस लाख पृष्ठ से अधिक सन्दर्भ सामग्री जुटाई जा चुकी है। 3500 प्रमुख हस्तियों के पत्र, 163 गजेटियर। सप्रे संग्रहालय ने 15 वर्ष के परिश्रम से 'भारतीय पत्रकारिता कोश' तैयार किया है जिसमें सन् 1780 से 1947 तक की सभी भाषाओं की पत्रकारिता का इतिवृत्त और देश के नवजागरण आन्दोलन का प्रामाणिक सन्दर्भ दर्ज है।

इस अवसर पर हस्तलिखित दुर्लभ पाण्डुलिपियों की प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। प्रदर्शित पाण्डुलिपियों में सन् 1511 की भागवत महापुराण, गोस्वामी तुलसीदास कृत अप्रकाशित पाण्डुलिपियाँ—श्री राम गीतावली, श्री रामविवाह मंगल, प्रागन गीता, श्री उमाशंभू मंगल, सत्रहवीं शताब्दी की 5 और अठारहवीं शताब्दी की 129 पाण्डुलिपियाँ विशेष उल्लेखनीय हैं।

पं० शिवराम मिश्र रचनावली का लोकार्पण

गाजियाबाद। दिनांक 13.05.2008 को कश्यप पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित पं० शिवराम मिश्र रचनावली का लोकार्पण वरिष्ठ आलोचक डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी ने किया। देवेन्द्र शर्मा ने भूमिका में लिखा है—''कहते हैं कि जब कोई अत्यन्त संवेदनशील सहृदय व्यक्ति किसी सांघातिक वेदना से विकल-विह्वल होता है तब उसकी साँस-साँस से कविता फूटने लगती है। मिश्रजी के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ था।'' लोकार्पण करते हुए डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी ने कहा, ''यह पुस्तक पूरी बीमार की डायरी जैसी है तथा गद्य में चमक है।''

इस कार्यक्रम में कथादेश के सम्पादक हरिनारायण, विभांशु दिव्याल, विजय, हेमंत कुकरेती, काजल पाण्डेय, राजेन्द्र नागदेव सहित दिलशाद गार्डन के साहित्यकार उपस्थित थे।

'चुप चंतारा रोना नहीं' लोकार्पित

वाराणसी। नगर की सुपरिचित कथाकार डॉ० नीरजा माधव की कहानियों के संग्रह 'चुप चंतारा रोना नहीं' का लोकार्पण पूर्व राज्यपाल डॉ० टी०एन० चतुर्वेदी ने गत 15 मई को नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में किया। लोकार्पण के पश्चात समीक्षा गोष्ठी में डॉ० चतुर्वेदी ने कहा कि डॉ० नीरजा माधव राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय मुद्दों को बड़ी बेबाकी से अपने लेखन का विषय बनाती हैं। बतौर मुख्य अतिथि प्रख्यात कथाकार चित्रा मुद्गल ने कहा कि डॉ० नीरजा कम वय की एक बड़ी लेखिका हैं। वक्ता डॉ० मृदुला सिन्हा, वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० रवीन्द्र कालिया, मध्यप्रदेश राजभाषा प्रचार समिति के मंत्री व प्रखर आलोचक कैलाश चन्द्र पंत, डॉ० प्रेमप्रकाश मिश्र, डॉ० कमला सिंघवी व डॉ० रामसुधार सिंह आदि ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादमी नई दिल्ली के उपसचिव डॉ० ब्रजेन्द्र त्रिपाठी ने तथा धन्यवाद ज्ञापन अजय कुमार ने किया।

देवर्षि नारद जयंती पर विश्व संवाद केन्द्र में समारोह

देवर्षि नारद जयंती पर विश्व संवाद केन्द्र में आयोजित समारोह में पत्रकारों ने कई विषयों पर विचार व्यक्त किये।

समारोह के मुख्य अतिथि वरिष्ठ पत्रकार व सासंद चंदन मिश्र ने 'पत्रकार व राष्ट्रीय चुनौतियाँ' विषय पर विचार रखे। उन्होंने कई क्षेत्रों में हुए अवमूल्यन का जिक्र करते हुए कहा कि सबसे बड़ी चुनौती समाज में आयी विकृत मानसिकता से जूझने की है। पत्रकारों को मूल्यों के प्रति जनमत तैयार करने के लिए संवेदनशील होना होगा। गंगा की बदहाली पर चिंता जताते हुए श्री मिश्र ने कहा कि धर्म-सम्प्रदाय से ऊपर उठकर देश की संस्कृति की इस पहचान को बचाने के लिए और अधिक प्रयास करने होंगे।

डॉ० सत्येन्द्र व नरेश शांडिल्य की पुस्तकों का लोकार्पण

पिछले दिनों अन्तरराष्ट्रीय साहित्यिक संस्था 'अक्षरम्' के रचना समय कार्यक्रम के अन्तर्गत अनिल जोशी द्वारा सम्पादित सुप्रसिद्ध प्रवासी साहित्यकार डॉ० सत्येन्द्र श्रीवास्तव के नवीनतम काव्य-संग्रह 'आज स्थिर है ज्वार' और 'अक्षरम् संगोष्ठी' पत्रिका के सम्पादक नरेश शांडिल्य के नवीनतम दोहा-संग्रह 'कुछ पानी कुछ आग' का लोकार्पण दिल्ली के हिन्दी भवन में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर 'अक्षरम् संगोष्ठी' पत्रिका के पांच वर्ष पूरे होने पर निकाले गए विशेषांक को भी लोकार्पित किया गया।

'भूमंडलीकरण के दौर में पुस्तक की भूमिका' पर संगोष्ठी

'भूमंडलीकरण के दौर में पुस्तक की भूमिका' पर आलेख प्रकाशन द्वारा एक दिवसीय समारोह का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन डॉ० निर्मला जैन ने किया। इस अवसर पर डॉ० जैन ने कहा कि पुस्तक आज भी घर के बिस्तर से लेकर सफर तक मनुष्य की सच्ची साथी है। भारत के विश्व में बढ़ते प्रभाव से विश्व में हिन्दी का प्रचार-प्रसार बढ़ा है। नेशनल बुक ट्रस्ट की निदेशक नुजहत हसन ने कहा कि भूमंडलीकरण से पुस्तकों को विश्व बाजार मिला है। इंटरनेट तो केवल इन्फॉर्मेशन टूल है जो आपको पुस्तकों और उनके विषय में बताता है। पुस्तक को पाठक खरीद कर ही पढ़ता है। दो सत्रों के इस आयोजन के विषय थे—'बदलती दुनिया बदलता पाठक' तथा 'पुस्तक को लोकप्रिय कैसे बनाया जाए?'

(शेष पृष्ठ 15 पर)

पाठकों के पत्र

मई 08 का 'भारतीय वाङ्मय' सर्वांग सुन्दर है, रचनाओं का चयन एवं सुन्दर-प्रस्तुति के साथ, सम्पादकीय एवं प्रकाशकीय, सजग दृष्टि एवं प्रेरणादायी लेख पाठकों में भी सुदृष्टि एवं सुदिशा स्थापित करती है। तदर्थ साधुवाद!

— **अम्बु शर्मा,** कोलकाता

'भारतीय वाङ्मय' का मई अंक मिला। कीर्तिशेष डॉ० बच्चन सिंह पर एक महत्त्वपूर्ण अंक निकालने के लिए बधाई स्वीकारें। यह अंक जहाँ डॉ० बच्चन सिंह को श्रद्धांजलि समर्पित करने में संवेदनाओं को टंकार देता है, वहीं उनके व्यक्तित्व और कृतित्व से भी परिचय करा देता है, और यही इसका विशेष महत्त्व है।

इस अंक में आपकी तीन सम्पादकीय टिप्पणियाँ देखकर हिन्दी पत्रिकाओं के पुराने युग की स्मृति हो आई जब 'हंस' में प्रेमचंद, 'विशाल भारत' में पं० बनारसीदास चतुर्वेदी प्रभृति विद्वान् एक-एक अंक में अनेक-अनेक सम्पादकीय टिप्पणियाँ लिखा करते थे। उसी पुरानी परम्परा को पुनर्जीवित करने के सफल प्रयास हेतु बधाई।

— **डॉ० प्रदीप जैन,** मुजफ्फरनगर

'भारतीय वाङ्मय' का मई अंक पुनः एक दु:खद सूचना के साथ पढ़ने को मिला।

डॉ० बच्चन सिंह से मेरा अत्यन्त घनिष्ट एवं आत्मीय सम्बन्ध था। प्रसारण में उनकी असीम रुचि थी और सलाहकार के रूप में उनका मार्गदर्शन मिलता रहता था। 'निराला निवेश' में यदा-कदा उनके साथ बैठकें और चर्चा होती रहती थी। उनकी दृष्टि व्यापक थी।

उस 'साहित्य मनीषी' को मेरा नमन! इस बीच रेडियो से समाचार आया—पं० किशन महाराज नहीं रहे। बनारस सूना हुआ। संगीत का एक सशक्त स्तम्भ टूट गया। संगीत और साहित्य के महाराजजी संगम थे।

संगीत के उस महानायक की स्मृतियों को शत-शत प्रणाम। — **विश्वनाथ पाण्डेय,**
पूर्व निदेशक, आकाशवाणी

मई मास का 'भारतीय वाङ्मय' प्राप्त कर बड़ी प्रसन्नता हुई। पूज्य मोदीजी के बाद, आप लोग जिस लगन-श्रद्धा-श्रम-समर्पण-साहित्यिक परख के साथ इसका प्रकाशन कर रहे हैं, अत्यन्त सराहनीय है, हमारी हार्दिक बधाई।

यह साहित्यिक गतिविधियों एवं सूचनाओं-समाचारों का पर्याय बन गया है। हर अंक में एक गीत-कविता और एक लघु कथा भी सम्मिलित कर, इसे पूर्णता प्रदान करें।

— **किशन बुधिया,** मीरजापुर

'भारतीय वाङ्मय' का अप्रैल 08 अंक बहुत सुन्दर लगा। विश्वविद्यालय प्रकाशन की गरिमा को आपका वैदुष्यपूर्ण सम्पादन हर दृष्टि से संभाल रहा है। पाठकों को पुस्तकों से जोड़ने का प्रयास अच्छा लगा। आपके हर स्तम्भ प्रेरक और उच्चकोटि के हैं। — **डॉ० हरिप्रसाद दुबे,** फैजाबाद

'भारतीय वाङ्मय' का प्रकाशन एक सफल और सराहनीय प्रयास है। अन्य तमाम महत्त्वपूर्ण पत्रिकाओं से 'भारतीय वाङ्मय' की एक अलग विशिष्ट पहचान बनी है। 'देखन में छोटो लगै घाव करे गम्भीर'। — **डॉ० बाबूराम,**
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, डोभी, जौनपुर

'भारतीय वाङ्मय' का अप्रैल 08 अंक प्राप्त कर प्रसन्नता हुई। अन्य अंकों के समान यह अंक भी प्रर्याप्त जानकारियों एवं साहित्यिक गतिविधियों से परिपूर्ण है। हम जैसे दूरस्थ व्यक्तियों के लिए यह पत्रिका काफी महत्त्व रखती है। डॉ० बच्चन सिंह एवं गोपालदास के देहावसान का समाचार पाकर काफी मर्माहत हुआ। कमलापति खत्री, सोना बाबू, उपेन्द्र वाजपेयी एवं उमाशंकर शास्त्री जी के आकस्मिक निधन से साहित्य जगत को भारी क्षति पहुँची है। इन सबको मेरी विनम्र श्रद्धांजलि!

— **डॉ० हरेराम पाठक,** डिगबोई, असम

ढेर सारी सामग्री तथा नित-नवीन सूचनाओं से भरा अप्रैल 2008 अंक अपने स्तरोन्नयन में निरन्तर संलग्न है, सम्पूर्ण देश की संगोष्ठियों की रपटों, पुरस्कार-सम्मान के विवरणों से लबालब यह अंक सम्पादक के अथक परिश्रम और सुरुचि का जीवंत रूप है, पुस्तकों की समीक्षाएँ नयी कृतियों के अन्तर्वस्तु से परिचित तो कराती ही हैं, लेखकीय साधना का सुखद समाचार भी पढ़ने को देती हैं।

प्रस्तुत अंक में कतिपय लेख कदाचित् देश की किसी अन्य साहित्यिक पत्रिका में न दिखायी पड़ें। 'साखी : हिन्दी की' और 'राष्ट्रीय रूप में हिन्दी' दो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण लेख अंक के वजन को बढ़ा देते हैं। सम्पादकीय में 'नमन' के अन्तर्गत स्व० त्रिभुवन सिंह का स्मरण 'भारतीय वाङ्मय' का एक नया इतिहास बनाता है।

आज पुस्तकों का प्रयोग पढ़ा-लिखा समाज अन्य वस्तुओं की अपेक्षा कम कर रहा है। राजनेता तो प्राय: इससे मुख मोड़ चुका है। 'अब ग्रन्थालयों में नेता नहीं दिखते' जैसे भावों से भरी अनेक टिप्पणियाँ समाज का कान खड़ा कर देती हैं। हाँ एक नया कॉलम—'काशी के सशक्त हस्ताक्षर' जोड़कर अंक की उपयोगिता में सहजत: वृद्धि हो जाती है। यह कालम जहाँ नव-सृजन से परिचित कराएगा वहीं सृजनशील व्यक्तियों को प्रकाश में भी लाएगा। — **उदयप्रताप सिंह,** सारनाथ

'भारतीय वाङ्मय' हमें हर माह प्राप्त हो रहा है। यह पत्रिका सही अर्थों में हिन्दी तथा अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका है। यह पत्रिका गागर में सागर भरती है। — **मंत्री, हिन्दी प्रचार समिति**
महबूबनगर (आंध्र प्रदेश)

'भारतीय वाङ्मय' का नया अंक स्व० बच्चन सिंह के ऊपर विशेषांक-सा बन गया है। 'भारतीय वाङ्मय' को पूर्ववत् पठनीय और प्रासंगिक देखकर अच्छा लगा। — **वेदप्रकाश अमिताभ,** अलीगढ़

आपके द्वारा प्रकाशित 'भारतीय वाङ्मय' प्रतिमाह मुझे प्राप्त हो रहा है। 'वाङ्मय' मासिक पत्रिका बहुत ही अच्छी तथा सारगर्भित है।

— **प्रकाश,** जयपुर

(पृष्ठ 14 का शेष)

'वेव्स' का अन्तरराष्ट्रीय भारत-सम्मेलन 2007

वृन्दावन की पावन-भूमि पर पिछले दिनों 'वेव्स' की भारत-शाखा तथा 'बन महाराज इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एण्ड टेक्नोलॉजी' के संयुक्त तत्वावधान में 'वैदिक मूल्य व्यवस्था : समसामयिक प्रासंगिकता और चुनौतियाँ' विषय पर ग्यारहवें अन्तरराष्ट्रीय भारत-सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। इसकी अध्यक्षता 'वेव्स' के संस्थापक प्रेसिडेंट, अटलान्टा यूनिवर्सिटी अमेरिका से पधारे मूर्धन्य विद्वान प्रो० भूदेव शर्मा ने की। अध्यक्षीय भाषण में प्रो० भूदेव शर्मा ने कहा कि विदेशी विद्वान भारतीय विचारधारा को ठीक से समझने में कठिनाई अनुभव करते हैं। उन्हें अपनी विचारधारा को ठीक से समझाने का उत्तरदायित्व भारतीय-विद्वानों का है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए 'वेव्स' की स्थापना की गई थी। प्राचीन भारतीय मान्यताओं को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समझाने के लिए नए विज्ञानसम्मत तर्क अपनाने होंगे।

उर्मिल सत्यभूषण की पुस्तकों का लोकार्पण

रूसी विज्ञान एवं संस्कृति केन्द्र, परिचय साहित्य परिषद् तथा नमन प्रकाशन के संयुक्त तत्वावधान में रूसी विज्ञान एवं सांस्कृतिक केन्द्र में सुपरिचित लेखिका उर्मिल सत्यभूषण की तीन पुस्तकों 'हमारे पत्र पढ़ना' (आत्मकथा), 'सुनो तारों की बात' (बाल नाटक) तथा 'ट्रिज सहायिका' (अनुवाद की पुस्तक) का विमोचन सुपरिचित कथाकार उपन्यासकार चित्रा मुद्गल तथा चर्चित कथाकार ममता कालिया ने किया। 'हमारे पत्र पढ़ना' (आत्मकथा) पर अनेक वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किये।

'रुबाई दर्शन' पर चर्चा

विगत दिनों साहित्य अकादमी सभागार में अक्षरम् के तत्त्वावधान में श्री धनसिंह खोबा 'सुधाकर' की पुस्तक 'रुबाई दर्शन' पर चर्चा की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री बालस्वरूप राही ने की।

प्राप्त पुस्तकें / पत्रिकाएँ

कब लौटेगा नदी के उस पार गया आदमी (कविता संग्रह) : भोलानाथ कुशवाहा, अंतिका प्रकाशन, सी-56/यू०जी०एफ०-4, शालीमार गार्डेन, एक्सटेंशन II, गाजियाबाद-201005 (उत्तर प्रदेश), मूल्य 225.00 रुपये

इस कविता-संग्रह की कविताएँ आज के परिवेश में व्यक्ति, समाज और सत्ता की हिलती-डगमगाती चूलों का निरीक्षण-सर्वेक्षण करती हैं। समग्र परिवर्तन के लिये निषेधात्मक होने के बजाय सकर्मक-संघर्ष के लिये ज़मीन तैयार करती ये कविताएँ, उन सभी ऐतिहासिक अथवा इतिहासेत्तर प्रसंगों से गुज़रती हैं जिनमें मजलूम के लिये दर्द है, पीड़ा है। मानवीय संवेदनाओं की सघनता को सहज भाषा में अभिव्यक्त करती ये कविताएँ अन्ततः आस्था और विश्वास लिये सुखद भविष्य की ओर संकेत करती हैं।

भारत की विशिष्ट विभूतियाँ : लोकरुचि प्रकाशन, राबर्ट्सगंज, सोनभद्र-231216 (उ०प्र०), मूल्य 100.00 रुपये

भारत विशिष्ट, अतिविशिष्ट विभूतियों का देश है। अपने देश में कुछ ऐसी विभूतियाँ पैदा हुईं हैं जो भारत का इतिहास बनाती हैं। ऐसी विभूतियों को वैश्वीकरण, अपसंस्कृति के भवजाल में हम विस्मृत करते जा रहे हैं। महात्मा गाँधी, पं० दीनदयाल उपाध्याय, स्वामी विवेकानन्द, पं० मदन मोहन मालवीय, डॉ० सम्पूर्णानन्द, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, आचार्य नरेन्द्रदेव, लाल बहादुर शास्त्री, लोकनायक जय प्रकाश नारायण के बारे में तमाम अनुद्घाटित तथ्यों को रेखांकित करते हुए केसरीजी ने मौलिक विचार प्रस्तुत किये हैं जो शोधार्थियों, शिक्षकों, रचना धर्मियों के लिए उपयोगी है।

ब्रजवेणु : *कवि भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'*, प्रकाशक : सहकार - (त्रैमासिक के अंतर्गत) संपादक : डॉ० प्रतीक मिश्र एवं भानुदत्त त्रिपाठी 'साहित्य-मंडप', चन्द्रलोक कॉलोनी, शहजादपुर, अकबरपुर -224 190, अंबेडकर नगर (उ०प्र०), सहयोग राशि : 25.00 रुपये

शब्द-ब्रह्म की मुखर प्रतीति है श्रीकृष्ण के वेणु-नाद। संपूर्ण सृष्टि ही बाँसुरी की स्वर लहरियों से स्पंदित है। भक्ति-साहित्य में राग-अनुराग-विराग की एकत्र अनुभूति है, यह बाँसुरी। संस्कृत-हिन्दी विद्वान, कवि, लेखक, पत्रकार, समीक्षक श्री भानुदत्त त्रिपाठी मधुरेश की नवीनतम काव्यकृति है ब्रजवेणु। इस काव्य में वेणु-स्वरों के साथ व्रजभूमि का स्पंदन है, गोप-गोपियों का जीवन है, साथ ही कृष्ण-चरित्र का अनुग्रंथन है। यह काव्य घनाक्षरी और सवैया छंद के प्रवाह में बँधकर स्वभावोक्ति और वक्रोक्ति का विधान बड़े ही सहज ढंग से करता है। वेणु-नाद का सीधा प्रभाव यह है कि—

चेतन अचेत और अचेतन सचेत होत
मधुरेश क्लेश कटि जात प्राणधारी के।
बाँसुरी की धुनि सुनि झूमि-झूमि उठैं तरु।
झुकि-झुकि चूमत चरन बनवारी के॥

'पुस्तक और मैं' : प्र० सम्पादक : प्रो० जी० गोपीनाथन, सम्पा० : राकेश श्रीमाल, प्रकाशक : महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, पो०बॉ०नं० 16, पंचटीला, उमरी, जिला-वर्धा (महाराष्ट्र) - 442 001, मूल्य : 60.00 रुपये

पुस्तकों के जीवन का आधार उनमें निहित ज्ञान की जीवनी शक्ति होती है, जो पाठकों के माध्यम से प्रसार पाती है। प्रत्येक युग का पाठक पुस्तकों से कुछ प्रेरणा और ऊर्जा प्राप्त करता है तभी किताबों का अस्तित्व शेष रहता है। किन्तु सूचना क्रान्ति के इस युग में पुस्तकों के जीवन में क्या परिवर्तन आयेगा, यह नहीं कहा जा सकता। इस पुस्तक के माध्यम से रचनाकारों ने अपने-अपने अध्ययन, आस्वाद और किताबों से मिली प्रेरणा का विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

मैसूर हिन्दी प्रचार पत्रिका : सम्पादक-डॉ० बी० राम संजीवैय्या, 58, वेस्ट ऑफ कार्ड रोड, राजाजी नगर, बैंगलूर, मूल्य : रु० 5.00

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 9 **जून 2008** **अंक : 6**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक
स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित
वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003
RNI No. UPHIN/2000/10104
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082
E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)